दुर्गापूजन-पद्धतिः

वेदाचार्य श्रीवेणीराम शर्मा गौड



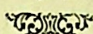
चौखम्भा ओरियन्टालिया

वाराणसी दि...

॥ श्रीः ॥

गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला

२९



दुर्गापूजन-पद्धतिः

लेखक

याज्ञिकसम्राट्, वेदवाचस्पति

पण्डित श्रीवेणीरामशर्मा गौड

वेदाचार्य, काव्यतीर्थ

वेदविभागाध्यक्ष—गोयनका संस्कृत कालेज, वाराणसी



चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्राच्यविद्या एवं दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक तथा विक्रेता

वाराणसी दिल्ली

प्रकाशक

चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० ३२

गोकुल भवन, के० ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी–२२१००१ (भारत)

टेलीफोन : ६३०२२ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर,

दिल्ली–११०००७

प्रथम संस्करण १९७७

मूल्य रु० ५–००



अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्भा विश्वभारती

चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)

वाराणसी

फोन : ६५४४४

GOKULDAS SANSKRIT SERIES
NO. 29

DURGĀPŪJANA PADDHATI

(WAY TO WORSHIP GODDESS DURGA)

by

Pt. BEṆĪRĀM ŚARMĀ GAUḌ

Vedāchārya, Kāvyatīrtha

Vedavibhāgādhyakṣa, Goenka Sanskrit College, Varanasi

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

A House of Oriental and Antiquarian Books

VARANASI DELHI

Publisher

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

P. O. Chaukhambha, Post Box No. 32

Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane

VARANASI–221001 (India)

Telephone : 63022 Telegram : Gokulotsav

Branch—Bungalow Road, 9 U. B. Jawahar Nagar

DELHI–110007

First Edition 1977

Price Rs. 4-00

Printers—Vidya Vilas Press, Varanasi

समर्पण

वैदिकधर्मके संरक्षक, सनातनधर्मके पोषक, ब्रह्म-गायत्रीके उपासक,
गायत्री-यज्ञके प्रवर्तक, परमार्थ-दर्शन (चतुर्वर्ग-मीमांसा) आदि
अनेक ग्रन्थोंके लेखक

अनन्तश्रीविभूषित श्री १००८ सुग्रीवानन्दजी महाराज

वेदान्ताचार्य, विद्यालङ्कार

[महन्त—डेराबाबारुद्रु, जि० ऊना (हिमाचल प्रदेश)]

की

सेवामें सादर समर्पित

निगमागमसिद्धान्त-वेदमार्गप्रसारणे ।
महायागादिसत्कर्त्रे महाराजाय धीमते ॥ १ ॥

गायत्रीयाजिने नित्यं दुर्गापूजनपद्धतिः ।
समर्प्यते परप्रीत्या वेणीरामेण शर्मणा ॥ २ ॥



भूमिका

'कलौ चण्डीविनायकौ' के अनुसार कलियुगमें दुर्गा और गणेशको प्रत्यक्ष तथा प्रधान देवता कहा है। दुर्गाको 'आदिशक्ति' कहा जाता है। आदिशक्ति दुर्गा [1]महाकाली, [2]महालक्ष्मी और [3]महासरस्वतीके रूपमें त्रिधा रूपा हैं। यह अखिल ब्रह्माण्डका सर्जन, पालन और संहार करती हैं। इसीलिये दुर्गाको अखिल ब्रह्माण्डकी प्रसवित्री कहा गया है—

'सैव विश्वं प्रसूयते।' (दुर्गासप्तशती १२।३७)

अखिल ब्रह्माण्डकी प्रसवित्री दुर्गा ही समस्त जगत्‌में व्याप्त हैं[4] और वही महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वतीके रूपमें अवतरित होकर देवताओंके कार्यको सिद्ध करती हैं, दुष्ट राक्षसोंका विनाश करती हैं और भक्तोंका कल्याण करती हैं।

दुर्गाका मुख्य कार्य अपने भक्तोंकी सर्वविध बाधाओंको दूरकर उनका कल्याण करना है। अतएव स्वयं दुर्गाने भी कहा है—

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥
(दुर्गासप्तशती ११।५४, ५५)

---

१. तमःप्रधान रौद्र-रूपको 'महाकाली' कहते हैं, जो दुष्टोंका संहार करती हैं।

२. सत्त्व-प्रधान वैष्णव-रूपको 'महालक्ष्मी' कहते हैं, जो जगत्‌का पालन करती हैं।

३. ब्राह्मी-शक्तिको 'सरस्वती' कहते हैं, जो जगत्‌की सृष्टि और ज्ञानका सञ्चार करती हैं।

४. 'नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं जगत्।'
(दुर्गासप्तशती १।६४)

मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत दुर्गासप्तशतीमें आदिशक्ति दुर्गाका महत्त्व अद्भुत तथा अलौकिक है। दुर्गासप्तशतीमें आदि शक्ति दुर्गाके विविध अवतारोंका महत्त्वपूर्ण वर्णन है, जिनको पढ़नेसे दुर्गाकी विशिष्ट शक्तिका पता चलता है कि उन्होंने विविध अवतार धारणकर मधु-कैटभ, शुम्भ-निशुम्भ, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज आदि असुरोंका संहारकर देवताओं और मानवोंका महान् कल्याण किया है।

आदिशक्ति दुर्गाके विविध रूप हैं। दुर्गा ही महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, गौरी, काली, तारा, चामुण्डा, कूष्माण्डा, ललिता, भैरवी, धूमावती, छिन्नमस्ता, मातङ्गी, शाकम्भरी, भ्रामरी और योगमाया आदि हैं, जिनकी विविध रूपोंमें ओर विविध विधियोंसे उपासना होती है।

आदिशक्ति दुर्गा ही शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री हैं। इनका ही नवरात्रिमें नवदुर्गाके रूपोंमें आराधन होता है।

आदिशक्ति दुर्गाका अद्भुत प्रभाव और महत्त्व है। इनकी शक्ति ही अखिल ब्रह्माण्डमें व्याप्त है। अतएव यह देवताओंके लिये देवशक्ति, तपस्वियोंके लिये तपःशक्ति, साधकोंके लिये साधनाशक्ति, राजाओंके लिये राज्यशक्ति, ब्राह्मणोंके लिये विद्याशक्ति, क्षत्रियोंके लिये बलशक्ति, वैश्योंके लिये लक्ष्मीशक्ति, शूद्रोंके लिये महत्त्वशक्ति, गृहस्थोंके लिये मायाशक्ति, भक्तोंके लिये भक्तिशक्ति, सर्वसाधारणके लिये कल्याणशक्ति और स्त्रियोंके लिये सौभाग्यशक्ति हैं। अतः जो मनुष्य सर्वदा श्रद्धा-भक्तिसे आदिशक्ति दुर्गाका स्तोत्रपाठ, पूजन, स्मरण आदि करते हैं, उनके समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं और वे अन्तमें मोक्षको प्राप्त करते हैं। इसलिये जो मनुष्य किसी भी रूपमें आदिशक्ति दुर्गाका आराधन करते हैं, वे पुण्यात्मा हैं और उनका मानव-जन्म सार्थक है।

दुर्गासप्तशती

दुर्गासप्तशतीमें प्रथम, मध्यम और उत्तम ये तीन चरित्र हैं। इनके प्रथम चरित्रके पहले अध्यायमें मधु और कैटभ इन दो राक्षसोंके वधका वर्णन, मध्यम चरित्रके दूसरे, तीसरे और चौथे इन तीन अध्यायोंमें महिषासुरके

वधका वर्णन और उत्तम चरित्रके पाँचवें, छठवें, सातवें, आठव, नवमें, दशवें और ग्यारहवें इन सात अध्यायोंमें शुम्भ-निशुम्भ आदि राक्षसोंके वधका वर्णन है।

दुर्गासप्तशतीके बारहवें अध्यायमें देवीके चरित्रोंके पाठ करनेके महत्त्वका वर्णन और तेरहवें अध्यायमें राजा सुरथ और समाधि नामक वैश्यको देवीके द्वारा प्रदत्त वरदानका वर्णन है।

दुर्गासप्तशतीके प्रथम, मध्यम और उत्तम ये तीनों ही चरित्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इनका प्रथम चरित्र ऋग्वेदस्वरूप, मध्यम चरित्र यजुर्वेदस्वरूप और उत्तम चरित्र सामवेदस्वरूप है।

दुर्गासप्तशतीमें देवीसूक्त और रात्रिसूक्तका जो उल्लेख है, वह ऋग्वेदमें भी मिलता है। ऋग्वेदके देवीसूक्त (ऋ० १०।८।१२५) और रात्रिसूक्त (ऋ० १०।८।१२७) से स्पष्ट है कि वेदमें भी दुर्गापूजाका उल्लेख है। अतः दुर्गा वेदस्वरूपिणी है। इसीलिये दुर्गाकी पूजा वैदिक है।

दुर्गासप्तशतीमें देवीसूक्त ही दुर्गोपासनाका उपजीव्य है। दुर्गा अथवा देवी-माहात्म्य उसीका विश्लेषणमात्र है। देवीसूक्त वेदका महत्त्वपूर्ण अंश है। देवीसूक्तका प्रतिपाद्य परब्रह्म परमेश्वर तथा उसकी शक्ति है। देवी-माहात्म्यमें परब्रह्म परमेश्वर ही महामायाके रूपमें वर्णित हैं। परब्रह्म परमेश्वर और महामाया ये दोनों अभिन्न हैं।

दुर्गाका महत्त्व

समस्त देवी-देवताओंका पर्वोत्सव प्रतिवर्ष केवल एक बार मनाया जाता है, किन्तु दुर्गा माताका पर्वोत्सव (नवरात्रि पर्वोत्सव) प्रतिवर्ष [1]चार बार

---

१. चैत्र, आश्विन, आषाढ़ और माघ–ये चार दुर्गाके नवरात्रि पर्वोत्सव हैं—

चैत्रेऽऽश्विने तथाऽऽषाढ़े माघे कार्यो महोत्सवः।
नवरात्रे महाराज पूजा कार्या विशेषतः॥ (देवीपु. ३।२४।२१)
आश्विने मधुमासे वा तपो मासे शुचौ तथा।
चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात्फलदायकम्॥ (देवीभा.मा. १।३१)

मनाया जाता है। अतः समस्त देवी-देवताओंमें दुर्गाका विशेष महत्त्व है।

दुर्गापूजा और उसका महत्त्व

वैदिक वाङ्मयसे लेकर पुराणों तथा तान्त्रिक ग्रन्थोंमें दुर्गा-पूजाका उल्लेख मिलता है। अतः दुर्गापूजा अत्यन्त प्राचीन है। दुर्गाकी उपासना प्राचीन कालसे ही प्रचलित है। अतएव ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं राम और कृष्ण ये सभी देवता दुर्गाके उपासक रहे हैं।

भारतवर्ष प्राचीन कालसे ही दुर्गापूजाका प्रधान केन्द्र है। अतएव भारतवर्षमें जगज्जननी दुर्गाकी उपासना सर्वाधिक प्रचलित है। इसीलिये हिन्दू-जाति नित्य, नैमित्तिक और काम्यरूपसे प्रतिदिन दुर्गाकी पूजा करती है। यों तो दुर्गाकी पूजा सर्वदा होती है, किन्तु चैत्र और आश्विनके नवरात्रमें विशेषरूपसे होती है।

नवरात्रिमें दुर्गाकी पूजा महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती इन तीन रूपोंमें होती है।

जो मनुष्य प्रतिवर्ष शरत्काल (शारदीय नवरात्र) में दुर्गाकी पूजा करते हैं, वे समस्त विघ्न-बाधाओंसे मुक्त होकर धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादिकी प्राप्ति करते हैं—

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः॥
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

(दुर्गासप्तशती १२।१२, १३)

अतः प्रत्येक मनुष्यको आत्मकल्याणार्थ प्रतिदिन दुर्गाका पूजन करना चाहिये। जो मनुष्य प्रतिदिन विधिपूर्वक दुर्गाका पूजन करते हैं, उन्हें दुर्गादेवी समस्त रोग-शोक और क्लेशोंसे मुक्त करती हैं और उन्हें पुत्र, पौत्र, धन, धान्य आदि सुखोंसे सम्पादित कर उनके समस्त मनोरथोंको पूर्ण करती हैं। दुर्गाके पूजनसे भक्तोंको भोग तथा मोक्ष प्राप्त होता है।

दुर्गापूजाके भेद

दुर्गापूजा तीन प्रकारकी कही गयी है—सात्त्विकी, राजसी और तामसी ।

सात्त्विकी पूजामें केवल गन्ध, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, फल, नारिकेल आदिका उपयोग होता है । इसमें मद्य, मांस और पशुवलि नहीं दी जाती ।

राजसी पूजामें गन्ध, अक्षत, पुष्प, नैवद्य, फल आदिके साथ-साथ पशुवलि दी जाती है और पञ्च-मकार भी निवेदित किया जाता है । यह पञ्च-मकार बहुत ही रहस्यमय है और इसका ठीक-ठीक विधान उच्च कोटिके साधक ही जानते हैं और उन्हींमें यह अधिक प्रचलित भी है ।

सामसी-पूजामें मनुष्य शास्त्रीय विधानका पालन न कर स्वेच्छाचारिता अपनाते हैं ।

उपर्युक्त तीन प्रकारकी दुर्गापूजामें सात्त्विक पूजाका विशेष महत्त्व है । अतः सभीको दुर्गाकी सात्त्विक पूजा करनी चाहिये ।

जो मनुष्य दुर्गाको 'मद्य-मांस-रक्त-भक्षिणी' कहकर उनके पूजनमें गन्ध, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य आदिके साथ-साथ मद्य, मांस और रक्तको सर्मपित करते हैं, वह साम्प्रदायिक उपासकोंके लिये ही विहित हो सकता है, सबके लिये नहीं ।

दुर्गोपासनाके भेद

दुर्गाकी उपासनाके अनेक भेद हैं । उनमें दुर्गाकी पाठात्मक, जपात्मक और हवनात्मक उपासना विशेष प्रचलित है । दुर्गासप्तशतीका पाठ अथवा दुर्गाके विविध स्तोत्र आदिका पाठ करना पाठात्मक उपासना, दुर्गाके नवार्ण आदि मन्त्रका जप करना जपात्मक उपासना और दुर्गासप्तशती अथवा दुर्गासहस्रनामवली आदि मन्त्रोंसे हवन करना हवनात्मक उपासना कही जाती है । सभी प्रकारकी उपासनाओंमें सर्वप्रथम दुर्गाका पूजन अनिवार्य और आवश्यक है ।

सन् १९७७ ई० के अप्रैल मासमें मैं श्रीगङ्गानगर (राजस्थान) दुर्गामन्दिरकी प्रतिष्ठा और महाशक्ति-यज्ञ करानेके लिये गया था। मुझे श्रीगङ्गानगरके सुप्रसिद्ध विद्वान् **पण्डित श्रीरामकरणजी शर्मा उपाध्यायकी** प्रेरणासे श्रीगङ्गानगरकी जनताने अपने यहाँ होनेवाले महाशक्तियज्ञ और दुर्गाकी प्रतिष्ठा करानेके लिये 'आचार्य' पदपर बुलाया था। दुर्गामन्दिरकी प्रतिष्ठाके समय होनेवाले महाशक्तियज्ञमें मैं प्रतिदिन दुर्गाका पूजन कराता था, जिसको देखकर पण्डित श्री रामकरणजी शर्मा उपाध्याय अत्यन्त प्रभावित और सन्तुष्ट हुए। उसी समय उन्होंने मुझसे साग्रह कहा—'आचार्यजी, आपके दुर्गा-पूजनके विशिष्ट विधि-विधानको देखकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई। मैंने इस प्रकारका विशिष्ट और विस्तृत दुर्गाका पूजन अद्यावधि न तो देखा और न सुना था। अतः आप शीघ्र ही एक महत्त्वपूर्ण 'दुर्गापूजन-पद्धति' का निर्माणकर प्रकाशित कर दीजिये, जिससे विद्वद्गण लाभान्वित हो सकें।' मैंने श्रीमान् पण्डितजीकी आज्ञा सहर्ष स्वीकारकर शीघ्र ही 'दुर्गापूजन-पद्धति' का निर्माण कर दिया, जोकि आपके कर-कमलोंमें प्रस्तुत है। वस्तुतः इस पुस्तकके निर्माणका समस्त श्रेय पण्डित श्रीरामकरणजी शर्मा महोदयको ही है, जिनकी प्रेरणासे प्रेरित होकर मैंने यह पुस्तक लिखी है।

मैंने 'दुर्गापूजन-पद्धति' में वैदिक और पौराणिक दोनों प्रकारके मन्त्र दिये हैं। पुस्तकके अन्तमें 'परिशिष्ट-भाग' भी दे दिया है, जिसमें दुर्गाके पाठ, हवन, वलिदान आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य विषय दिये गये हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक दुर्गोपासकके लिये आवश्यक है।

आशा है, यह पुस्तक सभीके लिये विशेष उपयुक्त और लाभप्रद होगी।

अन्तमें मैं चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसीके अध्यक्ष महोदय को विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस महत्त्वपूर्ण 'दुर्गापूजन-पद्धति' को प्रकाशितकर जनता-जनार्दनका विशेष कल्याण किया है।

शारदीय नवरात्रिपर्व
आश्विन शुक्ल प्रतिपदा सं. २०३४

वेणीराम गौड वेदाचार्य

विषय-सूची



॥ श्रीः ॥

दुर्गापूजनपद्धतिः



जगदम्बामादिशक्तिं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ।
विश्ववन्द्यां विश्वरूपां प्रणम्य परमेश्वरीम् ॥ १ ॥
वेणीरामेण गौडेन श्रीविद्याधरसूनुना ।
क्रियते सर्वलाभाय दुर्गापूजनपद्धतिः ॥ २ ॥

कृतनित्यक्रियो यजमानः शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं चोपवेश्य ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः । इति त्रिराचम्य,

ॐ पवित्रे स्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

इति मन्त्रेण पवित्रधारणं कृत्वा प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेवऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णुर्देवता शरीरादिपवित्रकरणे विनियोगः ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

'ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु' इति कुशोदकैरात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्षयेत् ।

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

इत्यनेन आसनशुद्धिः ।

अथ प्रधानवेद्यां सर्वतोभद्रमण्डलं विधाय, तदुपरि चतुर्विंशतिदलाकारं षड्दलाकारं वा दुर्गायन्त्रं विलिख्य, तत्र ब्रह्मादिमण्डलदेवानामावाहनं स्थापनं पूजनं च कृत्वा तदुपरि प्रधानकलशं संस्थाप्य, तस्मिन् कलशे वरुणदेवं पूजयेत् । ततः कलशस्य मूलभागे—

मूलाधाराय नमः, मूलाधारमावाहयामि स्थापयामि ।

कूर्माय नमः, कूर्ममावाहयामि स्थापयामि ।

शेषाय नमः, शेषमावाहयामि स्थापयामि ।

पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ।

पूर्णपात्राय नमः, पूर्णपात्रमावाहयामि स्थापयामि ।

पूर्वदिशि—ॐकारपीठाय नमः, ॐकारपीठमावाहयामि स्थापयामि ।

निर्ऋतिभागे—ॐ पूर्णगिरिपीठाय नमः, पूर्णगिरिपीठमावाहयामि स्थापयामि ।

वायुकोणे—ॐ कामगिरिपीठाय नमः, कामगिरिपीठमावाहयामि स्थापयामि ।

अथ पीठपूजा

देव्याः दक्षिणे—गुं गुरुभ्यो नमः । पं परमगुरुभ्यो नमः । पं परात्परगुरुभ्यो नमः । पं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः ।

देव्याः वामे—गं गणपतये नमः । दुं दुर्गायै नमः । क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

मध्ये—आधारशक्त्यै नमः । मूलप्रकृत्यै नमः । कालाग्निरुद्राय नमः । महामण्डूकाय नमः । कूर्माय नमः । वराहाय नमः । अनन्ताय नमः । भूम्यै नमः । अमृतार्णवाय नमः । रत्नद्वीपाय नमः । हेमगिरये

नमः। नन्दनोद्यानाय नमः। मणिभूम्यै नमः। रत्नमण्डपाय नमः। कल्पतरवे नमः। रत्नसिंहासनाय नमः।

आग्नेयादिकोणेषु—धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः। अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः।

ऊर्ध्वं ब्रह्मणे नमः। अधः अनन्ताय नमः। मध्ये—वास्तुपुरुषाय नमः। सं सत्याय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मां मायायै नमः। विं विद्यायै नमः।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु—

उड्डाणपीठेश्वरसहितामुड्डाणपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

मातृकापीठेश्वरसहितां मातृकापीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

जालन्धरपीठेश्वरसहितां जालन्धरपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

कोल्हागिरिपीठेश्वरसहितां कोल्हागिरिपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

पूर्णगिरिपीठेश्वरसहितां पूर्णगिरिपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

संहारगिरिपीठेश्वरसहितां संहारगिरिपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

कोल्हापुरपीठेश्वरसहितां कोल्हापुरपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

कामरूपपीठेश्वरसहितां कामरूपपीठेश्वर्यम्बापादुकां पूजयामि।

पुनः पूर्वादिचतुर्दिक्षु—

गं गणेशाय नमः। क्षं क्षेत्रपालाय नमः। पां पादुकाभ्यो नमः। वं वटुकेभ्यो नमः।

आग्नेयादिविदिक्षु—

जं जयायै नमः। विं विजयायै नमः। जं जयन्त्यै नमः। अं अपराजितायै नमः। तत्रैव—अग्निमुखवेतालाय नमः। प्रेतवाहनवेतालाय नमः। ज्वालामुखवेतालाय नमः। धूम्राक्षवेतालाय नमः। आनन्दकन्दाय नमः। संविन्नालाय नमः। दलेभ्यो नमः। केसरेभ्यो नमः। कर्णिकायै नमः। अं सूर्यमण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। उं ज्ञानात्मने नमः। विं विष्णुमायायै नमः। चें चेतनायै नमः। बुं बुद्ध्यै

नमः। निं निद्रायै नमः। क्षुं क्षुधायै नमः। छां छायायै नमः। शं शक्त्यै नमः। तृं तृष्णायै नमः। क्षां क्षान्त्यै नमः। जां जात्यै नमः। लं ललितायै नमः। शां शान्त्यै नमः। श्रं श्रद्धायै नमः। कां कान्त्यै नमः। लं लक्ष्म्यै नमः। धृं धृत्यै नमः। वृं वृद्ध्यै नमः। स्मृं स्मृत्यै नमः। दं दयायै नमः। तुं तुष्ट्यै नमः। पुं पुष्ट्यै नमः। मां मातृकायै नमः। भ्रां भ्रान्त्यै नमः। ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने नमः।

इति पीठपूजा।

पीठपूजानन्तरं कलशोपरि स्थापितपूर्णपात्रे दुर्गायन्त्रं विलिख्य तं स्थापयेत्।

दुर्गायन्त्रनिर्माणप्रकारस्त्वित्थम्—रजतपत्रोपरि मध्ये त्रिकोणं तद्बहिः षट्कोण तद्बाह्ये वृत्तं तद्बाह्येऽष्टौ दलानि तद्बाह्ये चतुर्द्वारं चतुरस्रत्रयमिति। एवं यन्त्रं विलिख्य, तत्र अष्टादशभुजां अष्टभुजां वा सिंहारूढां सुवर्णमयीं दुर्गाप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत्।

अथ अग्न्युत्तारणविधिः

आचार्यो यजमानो वा देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अस्याः सुवर्णमयश्रीदुर्गाप्रतिमायाः अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य, सुवर्णमयीं प्रतिमां सुवर्ण-रजत-ताम्रादिपात्रे निधाय घृतेनाभ्युक्ष्य तदुपरि दुग्धयुतां जलधारां दद्यात्।

अग्न्युत्तारणमन्त्राः—

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव॥ १॥
हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव॥ २॥

उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा ।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो
यज्ञं पावकवर्णठ्ठं शिवं कृधि ॥ ३ ॥
अपामिदं न्ययनठ्ठं समुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको
ऽअस्मभ्यठ्ठं शिवो भव ॥ ४ ॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५ ॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ इहावह ।
उप यज्ञठ्ठं हविश्च नः ॥ ६ ॥

पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्रुरुच ऽउषसो न भानुना । तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआयो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः ॥ ७ ॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे ।

अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यठ्ठं शिवो भव ॥ ८ ॥

नृषदे व्वेडप्सुषदे व्वेड् व्वर्हिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट् स्वर्व्विदे व्वेट् ॥ ९ ॥

ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाठ्ठं संवत्सरीणमुप भागमासते ।

अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥

ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽ एतारो ऽअस्य ।

येभ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु ॥ ११ ॥

प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्च्चोदा वरिवोदाः ।

अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यठं शिवो भव ॥ १२ ॥

एवमग्न्युत्तारणं कृत्वा आचार्यः यजमानो वा सुवर्णमयीं दुर्गाप्रतिमां जलपात्राद् बहिर्निष्कास्य नूतनपट्टवस्त्रेण सम्प्रोञ्छ्य यन्त्रोपरि विन्यस्य वामहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

अथ प्राणप्रतिष्ठाविधिः

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं श्रीदुर्गादेव्याः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ।

ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे ।

ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदये ।

ॐ आं बीजाय नमः गुह्ये (लिङ्गे) ।

ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः ।

ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु ।

करन्यासः ।

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादान-विहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं ठं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः ।

ॐ अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः ।

ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा ।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट् ।

ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम् ।

ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् । एवमात्मनि मूर्तौ (देवे) च न्यासं कुर्यात् ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः प्राणाः इह प्राणाः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः जीव इह स्थितः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मन-स्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य स्वस्तये सुखेन सुस्थिरं सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

ॐ अ॒यं पु॒रो भु॒व॒स्तस्य॑ प्रा॒णो भौवा॒य॒नो व॑स॒न्तः

प्प्राणायनो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपाᳯ-शुरुपाᳯशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठ ऽऋषिः प्प्रजापति-गृहीतया त्वया प्प्राणं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ १ ॥

ॐ शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ।

राजा मे प्प्राणो ऽअमृतᳯ सम्म्राट् चक्षुर्व्विराट् श्श्रोत्त्रम् ॥ २ ॥

ॐ पुनर्म्मनः पुनरायुर्म्म ऽआगन्पुनः प्प्राणः पुनरात्मा म ऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः श्श्रोत्रम्म ऽआगन् ।

व्वैश्वानरो ऽअदब्धस्तनूपा ऽअग्निर्नः पातु दुरिता-दवद्यात् ॥ ३ ॥

ॐ अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सदेव हविः ।

सन्ते प्प्राणो व्वातेन गच्छताᳯ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा ॥ ४ ॥

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञᳯ समिमं दधातु ।

व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामोँ ३॥ प्रतिष्ठ ॥ ५ ॥

ॐ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

इति दुर्गाप्रतिमायाः प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

अथ नेत्रोन्मीलनम्

ॐ वृत्रस्यासि कुनीनकश्चक्षुर्दाऽ असि चक्षुर्म्मे देहि ।

ततः गन्धादिपञ्चोपचारैः पूजनं संस्कारसिद्धये षोडशवारं प्रणवोच्चारणं कुर्यात् । ततः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः गर्भाधानादिषोडशसंस्काराः सम्पादनीयाः ।

ॐ गर्भाधानं सम्पादयामि । ॐ पुंसवनं सम्पादयामि । ॐ सीमन्तोन्नयनं सम्पादयामि । ॐ जातकर्म सम्पादयामि । ॐ नामकरणं सम्पादयामि । ॐ निष्क्रमणं सम्पादयामि । ॐ अन्नप्राशनं सम्पादयामि । ॐ चूडाकरणं सम्पादयामि । ॐ उपनयनं सम्पादयामि । ॐ वेदव्रतचतुष्टयं सम्पादयामि । ॐ गोदानं सम्पादयामि । ॐ व्रतविसर्गं सम्पादयामि । ॐ विवाहं सम्पादयामि ।

ततः प्रधानकलशोपरिस्थितसिंहासनोपरि श्रीदुर्गाप्रतिमां संस्थाप्य तस्याः षोडशोपचारैः राजोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात् ।

अथ एकादश न्यासाः

प्रथमो मातृकान्यासो देवसारूप्यदः स्मृतः ।

स च अङ्गुष्ठानामिकामेलनरूपया तत्त्वमुद्रया सर्वत्र विन्यस्य कर्तव्यः । सर्वत्रादौ प्रणवोच्चारः ।

ॐ अं नमो मूर्ध्नि । ॐ आं नमो ललाटे । ॐ इं नमो दक्षिणनेत्रे । ॐ ईं नमो वामनेत्रे । ॐ उं नमो दक्षिणकपोले । ॐ ऊं नमो वामकपोले । ॐ ऋं नमो दक्षिणकर्णे । ॐ ॠं नमो वामकर्णे । ॐ ऌं नमो दक्षनासापुटे । ॐ ॡं नमो वामनासापुटे । ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे । ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ । ॐ औं नमः अधोदन्तपङ्क्तौ । ॐ अं नमः शिखायाम् । ॐ अः नमस्तालुनि । ॐ कं नमो दक्षिणबाहुमूले । ॐ खं नमो दक्षिणकूर्परे । ॐ गं नमो दक्षिणमणिबन्धे । ॐ घं नमो दक्षिणाङ्गुलिमूले । ॐ ङं नमो दक्षिणाङ्गुल्यग्रे । ॐ चं नमो वामबाहुमूले । ॐ छं नमो वामकूर्परे । ॐ जं नमो वाममणिबन्धे ।

ॐ झं नमो वामाङ्गुलिमूले। ॐ ञं नमो वामाङ्गुल्यग्रे। ॐ टं नमो दक्षिणपादमूले। ॐ ठं नमो दक्षिणजानुनि। ॐ डं नमो दक्षिणपादगुल्फे। ॐ ढं नमो दक्षिणपादाङ्गुलिमूले। ॐ णं नमो दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ तं नमो वामपादमूले। ॐ थं नमो वामजानुनि। ॐ दं नमो वामपादगुल्फे। ॐ धं नमो वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ नं नमो वामपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ पं नमो दक्षिणपार्श्वे। ॐ फं नमो वामपार्श्वे। ॐ बं नमः पृष्ठे। ॐ भं नमो नाभौ। ॐ मं नमः उदरे। ॐ यं नमस्त्वचि। ॐ रं नमः असृजि। ॐ लं नमः मांसे। ॐ वं नमः स्नायुषु। ॐ शं नमः अस्थिनि। ॐ षं नमः मज्जायाम्। ॐ सं नमः मेदसि। ॐ हं नमः शुक्रे। ॐ क्षं नमः सर्वाङ्गे।

इति मातृकान्यासः प्रथमः, येन मान्त्रिकः साङ्गवेदसमो भाति ॥१॥

द्वितीयः सारस्वतो न्यासः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करतलाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं स्फाराभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मणिबन्धाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रद्वयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूर्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अग्नये नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षिणायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं निर्ऋतये नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पश्चिमायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वायवे नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उत्तरायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईशानाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अधस्तान्नमः।

इति द्वितीयः सारस्वतो न्यासः, येन दुरितं जाड्यं वाक्-पापसञ्चयश्च विलयं याति ॥ २ ॥

तृतीयो मातृगणन्यासः।

ब्रह्माणी मां पूर्वतः पातु। माहेश्वरी मां आग्नेय्यां पातु। कौमारी मां

दक्षिणे पातु। वैष्णवी मां नैर्ऋत्यां पातु। वाराही मां पश्चिमे पातु। नारसिंही मां वायव्यां पातु। इन्द्राणी मां उत्तरे पातु। चामुण्डा मां ईशान्यां पातु। व्योमेश्वरी मां ऊर्ध्वं पातु। सप्तद्वीपेश्वरी मां भुवि पातु। नागेश्वरी मां अधः पातु।

इति तृतीयो मातृगणन्यासः, येन कर्ता त्रिपु लोकेषु निर्भयः सन् सर्वदेवप्रियो भवति ॥ ४ ॥

चतुर्थः जरामृत्युनाशको न्यासः।

कमलाङ्कुशमण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं मे पातु।
खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं मे पातु।
पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकम्भरी पश्चिमाङ्गं मे पातु।
धनुर्बाणधरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामाङ्गं मे पातु।
शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि मां पातु।
चित्रकान्तिभृद्भ्रामरी चरणान्मस्तकावधि मां पातु।

इति चतुर्थः जरामृत्युनाशको न्यासः, येन कर्ता अग्नि-वारिभ्यां निर्भयो भूत्वा जरामरणवर्जितो भवति ॥ ४ ॥

पञ्चमो वशीकरणः अभेद्यो न्यासः।

ऐं पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा मां पातु।
श्रीं नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं जनार्दनः मां पातु।
हंसौं विशुद्धेः शिखापर्यन्तं त्रिलोचनो रुद्रो मां पातु।
ऐं हंसौं मे पदद्वन्द्वं पातु।
श्रीं वैनतेयो मे करद्वन्द्वं पातु।
हंसौं वृषभः चक्षुषी मे पातु।
ह्रीं गजाननः सर्वाङ्गं मे पातु।
ह्रीं आनन्दमयो हरिः परापरौ देहभागौ मे पातु।

इति पञ्चमः वशीकरणः अभेद्यो न्यासः, येन कर्ता महापापाति-पापाभ्यां मुक्तो भवति ॥ ५ ॥

षष्ठः सद्गतिप्रापको न्यासः ।

ह्रीं अष्टादशभुजा महालक्ष्मीः मध्यमाङ्गं मां पातु ।
ऐं अष्टभुजा सरस्वती ऊर्ध्वं मां पातु ।
क्लीं त्रिंशल्लोचना महाकाली अधो मां पातु ।
क्ष्रौं सिंहो हस्तद्वयं मां पातु ।
ऐं परमहंसोऽक्षिमण्डलं मां पातु ।
महिषारूढः प्रेतः पदद्वयं मां पातु ।
हंसौं महेशश्चण्डिकायुक्तः सर्वाङ्गं मां पातु ।

इति षष्ठः सद्गतिप्रापको न्यासः, येन वैकुण्ठसुखं सर्वकष्टोपशान्तिश्च भवति ॥ ६ ॥

सप्तमो रोगनाशको न्यासः ।

ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे । ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे । क्लीं नमः वामनेत्रे । चां नमो दक्षिणकर्णे । मुं नमो वामकर्णे । डां नमो दक्षिणनासापुटे । यैं नमो वामनासापुटे । विं नमो मुखे । च्चें नमः पायौ ।

इति सप्तमो मूलाक्षरो रोगनाशको न्यासः, येन सर्वरोगक्षयो भवति ॥ ७ ॥

अष्टमः सर्वदुःखहरो न्यासः ।

च्चें नमः पायौ । विं नमो मुखे । यैं नमो वामनासापुटे । डां नमो दक्षिणनासापुटे । मुं नमो वामकर्णे । चां नमो दक्षिणकर्णे । क्लीं नमो वामनेत्रे । ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे । ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे ।

इति अष्टमः विलोमाक्षरः सर्वदुःखहरो न्यासः, येन सर्वदुःखं विनश्यति ॥ ८ ॥

नवमो देवताप्राप्तिकृन्न्यासः ।

मूलमुच्चार्य, मस्तकाच्चरणान्तं चरणान्मस्तकान्तम् अष्टवारं व्यापकं कुर्यात् । तद्यथा—

प्रथमं पुरतो मूलेन मस्तकाच्चरणावधि । ततश्चरणान्मस्तकावधि

मूलोच्चारेण व्यापकम्। एवं दक्षिणतः पश्चाद् वामभागे चेति प्रतिदिग्भागेऽनुलोम-विलोमतया द्विर्द्विरिति।

नवमो मूलव्यापके देवताप्राप्तिकृन्न्यासः, येन साधको देववद् भवेत्॥ ९॥

दशमस्त्रैलोक्यवशकृन्न्यासः।

मूलमुच्चार्य, हृदयाय नमः। शिरसे स्वाहा। शिखायै वषट्। कवचाय हुम्। नेत्रत्रयाय वौषट्। अस्त्राय फट्। इति। एवं मूलमुच्चार्य षडङ्गेषु न्यसेत्।

इति दशमस्त्रैलोक्यकृन्न्यासः, येन साधको यद्वदति तदेव भवति यद् दृष्ट्या पश्यति तत्तथैव भवति॥ १०॥

एकादशः सर्वरक्षाकरो न्यासो दशम न्याससमफलदायकः।

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ १॥
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥ २॥
यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥ ३॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥ ४॥
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥ ५॥

आद्यं वाग्बीजं ऐं श्यामवर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत्।

शूलेन पाहिनो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ १॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ २॥

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥

द्वितीयं मायाबीजं ह्रीं बालार्कवर्णं ध्यात्वा, सर्वाङ्गे विन्यसेत् ।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥

तृतीयं कामबीजं क्लीं स्फटिकाभासं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् ।
इत्येकादशः सर्वानिष्टहरः सर्वाभीष्टदः सर्वरक्षाकरश्च । इति ।

अथ अखण्डदीपस्थापनम्

दुर्गादेव्या दक्षिणे भागे घृतदीपं वामभागे च तैलदीपं संस्थाप्य प्रज्वाल्य गन्धादिभिरभ्यर्च्य च प्रार्थयेत् ।

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

अनन्तरं शङ्ख-घण्टयोः गन्धाक्षतपुष्पादिभिः पूजनं कर्तव्यम् ।

अथ कर्मपात्रासादनम्

तत्रादौ कलशस्थापनम् । स्ववामे बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यन्त्रं विलिख्य गन्धाक्षतैः पूजयेत् । मध्ये मूलम् । त्रिकोणे त्रिपदैः—ऐं ह्रीं क्लीं । चामुण्डायै । विच्चे नमः । एवं द्विरावृत्या षट्-

कोणे। मातृकया वृत्तम्—अं आं इत्यादि क्षान्तम्॥ चतुरस्रे षडङ्गानि—आग्नेये ऐं हृदयाय०। ऐशाने ह्रीं शिरसे०। नैर्ऋत्ये क्लीं शिखायै०। वायव्ये चामुण्डायै कवचाय०। मध्ये विच्चे नेत्रत्रयाय०। चतुर्दिक्षु मूलम् अस्त्राय०। इति यन्त्रं सम्पूज्य हुं इति आधारं प्रक्षाल्य। मूलेन संस्थाप्य। ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गा-देवताकलशपात्राधाराय नमः इति आधारं सम्पूज्य दश कलाः पूजयेत्॥

ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः॥ १॥ रं ऊष्मायै नमः॥ २॥ लं ज्वलिन्यै नमः॥ ३॥ वं ज्वालिन्यै नमः॥ ४॥ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः॥ ५॥ षं सुश्रियै नमः॥ ६॥ सं सुरूपायै नमः॥ ७॥ हं कपिलायै नमः॥ ८॥ लं हव्यवाहायै नमः॥ ९॥ क्षं कव्यवाहायै नमः॥ १०॥

इति सम्पूज्य हुं इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता-कलशपात्राय नमः इति सम्पूज्य द्वादश कलाः पूजयेत्।

ॐ कं भं तापिन्यै नमः॥ १॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः॥ २॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः॥ ३॥ ॐ घं पं मरिच्यै नमः॥ ४॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः॥ ५॥ ॐ चं घं रुच्यै नमः॥ ६॥ ॐ छं दं सुषुम्नायै नमः॥ ७॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः॥ ८॥ ॐ झं तं विश्वायै नमः॥ ९॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः॥ १०॥ ॐ टं ढं धारिण्यै नमः॥ ११॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः॥ १२॥

इति सम्पूज्य, तत्र विलोममातृकया जलमापूरयेत्। यथा—

ॐ क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं टं ढं डं ठं टं अं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं॥

गालिनीमुद्रया (करद्वयाङ्गुष्ठतर्जन्यग्रसंयोगे गालिनी मुद्रा) निरीक्ष्य, षोडशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गा–देवता–कलशामृताय नमः इति सम्पूज्य तत्र षोडश कलाः पूजयेत्।

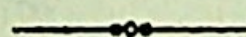
अं अमृतायै नमः॥ १॥ आं मानदायै नमः॥ २॥ इं पूषायै नमः॥ ३॥ ईं पुष्ट्यै नमः॥ ४॥ उं तुष्ट्यै नमः॥ ५॥ ऊं रत्यै नमः

॥ ६ ॥ ऋं धृत्यै नमः ॥ ७ ॥ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ८ ॥ लृं चन्द्रिकायै नमः ॥ ९ ॥ ॡं कान्त्यै नमः ॥ १० ॥ एं ज्योत्स्नायै नमः ॥ ११ ॥ ऐं श्रियै नमः ॥ १२ ॥ ओं प्रीत्यै नमः ॥ १३ ॥ औं अङ्गदायै नमः ॥ १४ ॥ अं पूर्णायै नमः ॥ १५ ॥ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ १६ ॥

इति सम्पूज्य, फडिति संरक्ष्य, मूलेन देवीमावाह्य आवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्शयेत्। यथा—

मूलेन—आवाहिता भव। स्थापिता भव। सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव। सम्मुखीकृता भव। षडङ्गेन सकलीकृता भव। मूलेन हृदयायेत्यादि अवगुण्ठिता भव। अमृतीकृता भव। परमीकृता भव। योनिमुद्रां प्रदर्श्य, मूलेन सम्पूज्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च प्रदर्शयेत्।

इति कर्मपात्रासादनम्।



दुर्गापूजनम्

सङ्कल्पः

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहम अमुकशर्माऽहं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीदुर्गादेव्यनुग्रहतो देवकृत-ग्रहकृत-राजकृत-मनुष्यकृत-सर्वविधबाधानिवृत्तिपूर्वकं धन-धान्य-पुत्र-पौत्र-दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिसमृद्ध्यर्थं, सर्वाभीष्टफलप्राप्तिपूर्वकधर्मार्थ-काममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपायास्त्रिगुणात्मिकायाः श्रीदुर्गादेव्याः प्रीत्यर्थं यथोपचारैः दुर्गापूजन-महं करिष्ये ।

अथ नवार्णविधिः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णि-गनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम् , ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् , श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थे न्यासे पूजने च विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे । महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्य-माभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठि-काभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमो वामनेत्रे। ॐ चां नमो दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमो वामकर्णे। ॐ डां नमो दक्षिणनासायाम्। ॐ यैं नमो वामनासायाम्। ॐ विं नमो मुखे। ॐ च्चें नमो गुह्ये। एवं विन्यस्य 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इति नवार्णमन्त्रेण अष्टवारं व्यापकं कुर्यात्।

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ १॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ २॥

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ १ ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥ २ ॥

ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती ।
यज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, श्री दुर्गां ध्यायामि ।

आवाहनम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम् ।
दानवांस्तर्जयन्तीं च सर्वकामदुघां शिवाम् ॥ १ ॥
शङ्ख-चक्र-गदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभानने ।
आवाहयाम्यहं देवि ! सर्वकामार्थसिद्धये ॥ २ ॥

विश्वेश्वरि महादेवि ! सर्वसम्पत्प्रदायिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि ! नमस्ते शङ्करप्रिये ॥ ३ ॥
मम यज्ञे समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह ।
यावद् यज्ञः समाप्येत तावत्त्वं सुस्थिरा भव ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

आसनम्

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
ॐ पुरुष ऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै श्रीमहाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, आसनं समर्पयामि । आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ।

पाद्यम्

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यः आनीतं तोयमुत्तमम् ।
पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वं व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ।

मधुपर्कः

ॐ यन्मधुनो मधव्यं
परमꣳ रूपमन्नाद्यम् ।
तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण
रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि ।

आचमनम्

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्ये
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥
ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः ।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभि स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं देवि त्वं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

स्नानम् (पूर्वं मलापकर्षणार्थं स्नानम्)

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्व्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

[1]पुनराचमनीयम्

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः ।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥

---

१. स्नान—वस्त्र-यज्ञोपवीतान्तेऽपि आचमनं विधेयम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पुनराचमनीयं समर्पयामि ।

सुगन्धितद्रव्यस्नानम् (इत्रतैलादिना स्नानम्)

ॐ अᳪं शुनाते ऽअᳪं शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे ।
सर्वलोकेषु सर्वेशे ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ।

दुग्धस्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दुग्धस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखात्करत्प्रण ऽआयूᳪंषि तारिषत् ॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दधिस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

घृतस्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः
स्वाहा ॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, घृतस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुस्नानम्

ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवठं० रजः ।
मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः ।
माध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः ॥

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् ।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्

ॐ अपाᳫँ रसमुद्वयसᳫँ सूर्ये सन्तᳫँ समाहितम्। अपाᳫँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकामी-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम् ।
चन्दनं देवि देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उद्वर्तन(उबटन)स्नानम्

ॐ अ॒ꣳशुना॑ते ऽअ॒ꣳशुः पृच्यतां॒ परु॑षा परुः॑ ।
ग॒न्धस्ते॒ सोम॑मवतु॒ मदा॑य॒ रसो॒ ऽअच्यु॑तः ॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्त्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः उद्वर्त्तनस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

महाभिषेकस्नानम्

श्रीसूक्तेन पुरुषसूक्तेन वा शंखेन जलधारां दद्यात् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, महाभिषेकस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शु॒द्धवा॑लः स॒र्व्वशु॑द्धवालो मणि॒वाल॒स्त ऽआ॑श्वि॒नाः । श्येतः॑ श्ये॒ताक्षो॒ऽरु॒णस्ते रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑ये क॒र्णा या॒मा ऽअ॑वलि॒प्ता रौ॒द्रा नभो॑रूपाः पार्ज्जन्याः ॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम् ।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

दुर्गामूर्तिस्थापनम्

सिंहासनोपरि कलशोपरि वा दुर्गामूर्तिं संस्थाप्य पूजयेत् ।

वस्त्रोपवस्त्रम् (धौतवस्त्रम्, कञ्चुकीम् , उत्तरीयवस्त्रं च)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाᳬंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

पट्टकूलयुगं देवि ! कञ्चुकेन समन्वितम् ।
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे दुर्गतिनाशिनि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरवतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, वस्त्रद्वयं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः ॥

स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-

महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सौभाग्यसूत्रम्

सौभाग्यसूत्रं वरदे! सुवर्ण-मणि-संयुतम्।
कण्ठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

अक्षतान्निर्मलान् दिव्यान् कुङ्कुमाक्तान सुशोभनान्।
गृहाणेमान् महादेवि प्रसीद परमेश्वरि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

चन्दनम्

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि।

हरिद्राचूर्णम्

ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं
मध्या कर्त्तोर्विततर्ठ० सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थाद्रात्री
व्वासस्तनुते सिमस्मै ॥

हरिद्रारञ्जिते देवि सुख-सौभाग्यदायिनि ।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छ मे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि ।

कुङ्कुमम् (गुलालम्)

ॐ उस्राचेतं धूर्षाहौ युज्येथामनश्रू ऽअवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ।
स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् ॥

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, कुङ्कुमं समर्पयामि ।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो
व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा ऽअरुषो न
व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ।
अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि ।

कज्जलम्

ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽअसि चक्षुर्मे देहि ॥

अथवा

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी ऽअन्तरिक्षꣳ
सूर्य ऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम् ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, कज्जलं समर्पयामि ।

[1]दूर्वाङ्कुरान्

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

दूर्वादले श्यामले त्वं महीरूपे हरिप्रिये ।
दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

---

१. 'न दूर्वया यजेद् दुर्गाम्' इत्यनेन दूर्वया दुर्गायाः पूजनं यन्निषिद्धम्, तच्छ्वेतदूर्वापरमिति शाक्तानन्दतरङ्गिण्याम् ।

बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च
नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः ।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च
नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा ।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

पल्लवान्

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथपूरुषम् ॥

गृहद्वारे चोग्रमपि दुष्टासुरनिबर्हिणि ।
पूजां करोमि चावङ्गि ! पल्लवैर्नन्दनोद्भवैः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पल्लवान् समर्पयामि ।

फलमालाम्

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥

शरत्काले समुद्भूतां निशुम्भासुरमर्दिनि ।
फलमालां वरां देवि ! गृहाण सुरपूजिते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, फलमालां समर्पयामि ।

आभूषणम् (अलङ्कारम्)

ॐ युवं तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं व्वज्रेण तन्तमिद्धतम् । दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥

अस्माकꣳ शत्रून् परि शूर
विश्वतो दर्म्मा दर्षीष्ट विश्वतः ।
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः
स्याम सुवीरा व्वीरैः सुपोषाः पोषैः ॥

हार-कङ्कण-केयूर-मेखला-कुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, आभूषणं समर्पयामि ।

रत्नमालाम्

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

मुक्ताफलयुतां मालां रत्न-वैडूर्यसुप्रभाम् ।
माणिक्य-स्वर्णग्रथितां गृह्यतां परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, रत्नमालां समर्पयामि ।

पुष्पमालाम्

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे
पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।

इदंविष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
इष्णन्निषाणामुम्मं ऽइषाण
सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥
पद्म-शङ्खज-पुष्पादिक्षतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।

पुष्पाणि

ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥
पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ।
पूजा ते क्रियते देवि कुसुमैरनुगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि ।

नानापरिमलद्रव्याणि

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परिपातु व्विश्वतः ॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् ।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

[1]सौभाग्यद्रव्याणि (सौभाग्यपिटारी)

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬं शूद्रो अजायत ।

हरिद्रा कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्यमेतद्वै गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ।

सुगन्धिद्रव्यम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

जननि चम्पकतैलमिदं पुरा मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।
सुरभि गन्धमिदं च चतुस्समं सपदि सर्वमिदं परिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ।

अङ्गपूजनम्

ॐ दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि । ॐ महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि । ॐ मङ्गलायै नमः, जानुद्वयं पूजयामि । ॐ कात्यायन्यै नमः, ऊरुद्वयं पूजयामि । ॐ भद्रकाल्यै नमः, कटिं पूजयामि । ॐ कमलवासिन्यै नमः, नाभिं पूजयामि । ॐ शिवायै नमः, उदरं पूजयामि ।

---

१. हरिद्राकुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम् । कज्जलं कण्ठसूत्रादि सौभाग्यद्रव्यमुच्यते ॥

ॐ क्षमायै नमः, हृदयं पूजयामि । ॐ कौमार्यै नमः, स्तनौ पूजयामि ॐ उमायै नमः, हस्तौ पूजयामि । ॐ महागौर्यै नमः, दक्षिणबाहुं पूजयामि । ॐ वैष्णव्यै नमः, वामबाहुं पूजयामि । ॐ रमायै नमः, स्कन्धौ पूजयामि । ॐ स्कन्दमात्रे नमः, कण्ठं पूजयामि । ॐ महिषासुर-मर्दिन्यै नमः, नेत्रे पूजयामि । ॐ सिंहवाहिन्यै नमः, मुखं पूजयामि । ॐ माहेश्वर्यै नमः, शिरः पूजयामि । ॐ कात्यायन्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ।

इत्यङ्गपूजनम् ।

[1]आवरणपूजनम् [प्रथमः प्रकारः]

आवरणदेवता आवाह्य पूजयेत् ।

'पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची दिक् सम्प्रकीर्तिता' इति वचनमनुसृत्य प्रागादिदिशो ग्राह्याः ।

इन्द्रादिलोकपालतदायुधविषये तु सूर्योदयिकैवेति ज्ञेयम् ।

प्रथमावरणम्

तत्र यन्त्रषट्कोणस्थपश्चिमकोणे महालक्ष्मीपृष्ठभागे सरस्वती-ब्रह्मभ्यां नमः, सरस्वती-ब्रह्माणौ आवाहयामि ॥ १ ॥

नैर्ऋत्यकोणे—गौरी-रुद्राभ्यां नमः, गौरीरुद्रौ आवाहयामि ॥ २ ॥

वायुकोणे—लक्ष्मी-हृषीकेशाभ्यां नमः, लक्ष्मी-हृषीकेशौ आवाहयामि ॥ ३ ॥

पूर्वकोणे—अष्टादशभुजायै नमः, अष्टादशभुजामावाहयामि ॥ ४ ॥

अग्निकोणे—दशाननायै नमः दशाननामावाहयामि ॥ ५ ॥

ईशानकोणे—अष्टभुजायै नमः, अष्टभुजामावाहयामि ॥ ६ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

---

१. आवरणपूजा पुष्पदानानन्तरं कर्त्तव्या । "कृत्वाऽऽवरणपूजां तु धूपदीपौ निवेदयेत्" इति पुरश्चर्यार्णवोक्तेः ।

अनेन प्रथमावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

द्वितीयावरणम्

पुनः षट्कोणेषु प्रागादिषु—ॐ नं नन्दजायै नमः, नन्दजामावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः, रक्तदन्तिकामावाहयामि ॥२॥ ॐ शां शाकम्भर्यै नमः, शाकम्भरीमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ भीं भीमायै नमः, भीमामावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः, भ्रामरीमावाहयामि ॥ ६ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

तृतीयावरणम्

षट्कोणाद् बहिराग्नेयादिचतुर्भागेषु—ॐ जं जयायै नमः, जयामावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ विं विजयायै नमः, विजयामावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ जं जयन्त्यै नमः, जयन्तीमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ अं अपराजितायै नमः, अपराजितामावाहयामि ॥ ४ ॥

षट्कोणपार्श्वयोः दक्षिणभागे—ॐ सिंहाय नमः, सिंहमावाहयामि ॥ ५ ॥

उत्तरभागे—ॐ महिषाय नमः, महिषमावाहयामि ॥ ६ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

चतुर्थावरणम्

अष्टपत्रेषु प्रागादिषु—ॐ ब्रां ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि ॥ १ ॥

ॐ मां माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ कौं कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ वैं वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ वां वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ नां नारसिंह्यै नमः, नारसिंहीमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ शिं शिवदूत्यै नमः, शिवदूतीमावाहयामि ॥ ८ ॥ ॐ चां चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि ॥ ९ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

अनेन चतुर्थावरणावर्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

पञ्चमावरणम्

पुनरष्टदलेषु प्रागादिषु—ॐ अं असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्गभैरवमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ रुं रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ चं चण्डभैरवाय नमः, चण्डभैरवमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ क्रों क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ उं उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरवमावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ कं कपालभैरवाय नमः, कपालभैरवमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐ भीं भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरवमावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ सं संहारभैरवाय नमः, संहारभैरवमावाहयामि ॥ ८ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

षष्ठावरणम्

चतुर्विंशतिदलेषु प्रागादिक्रमेण—ॐ विं विष्णुमायायै नमः, विष्णुमायामावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ चें चेतनायै नमः, चेतनामावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ बुं बुद्ध्यै नमः, बुद्धिमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ निं निद्रायै नमः,

निद्रामावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ क्षुं क्षुधायै नमः, क्षुधामावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ छां छायायै नमः, छायामावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐ शं शक्त्यै नमः, शक्तिमावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ तृं तृष्णायै नमः, तृष्णामावाहयामि ॥ ८ । ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः, क्षान्तिमावाहयामि ॥ ९ ॥ ॐ जां जात्यै नमः, जातिमावाहयामि ॥ १० ॥ ॐ लं लज्जायै नमः, लज्जामावाहयामि ॥ ११ ॥ ॐ शां शान्त्यै नमः, शान्तिमावाहयामि ॥ १२ ॥ ॐ श्रं श्रद्धायै नमः, श्रद्धामावाहयामि । १३ ॥ ॐ कां कान्त्यै नमः, कान्तिमावाहयामि ॥ १४ ॥ ॐ लं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि ॥ १५ ॥ धृं धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि ॥ १६ ॥ ॐ वृं वृत्त्यै नमः, वृत्तिमावाहयामि ॥ १७ ॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः, स्मृतिमावाहयामि ॥ १८ ॥ ॐ दं दयायै नमः, दयामावाहयामि ॥ १९ ॥ ॐ तुं तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि ॥ २० ॥ ॐ पुं पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि ॥ २१ ॥ ॐ मां मात्रे नमः, मातरमावाहयामि ॥ २२ ॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः, भ्रान्तिमावाहयामि ॥ २३ ॥ ॐ चिं चित्त्यै नमः, चित्तिमावाहयामि ॥ २४ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम् ॥

अनेन षष्ठावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

सप्तमावरणम्

भूगृहरव्युदयप्रागादिषु—ॐ लं इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि ॥१॥ ॐ रं अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय नमः, यममावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ क्षां निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः, वायुमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐ सं सोमाय नमः, सोममावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ हं रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि ॥ ८ ॥

ऐशानीप्रागन्तराले—ॐ आं ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि ॥ ९ ॥

वरुणनिर्ऋत्यन्तराले—ॐ ह्रीं शेषाय नमः, शेषमावाहयामि ॥ १० ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

अनेन सप्तमावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

अष्टमावरणम्

पुनस्तत्रैव क्रमेण—

ॐ वं वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ शं शक्त्यै नमः, शक्तिमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि ॥ ४ ॥ ॐ पां पाशाय नमः, पाशमावाहयामि ॥ ५ ॥ ॐ अं अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः, गदामावाहयामि ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः, पद्मावाहयामि ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः, चक्रमावाहयामि ॥ १० ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

अनेन अष्टमावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

नवमावरणम्

भूगृहाद् बहिः प्रागादि-दिक्षु—ॐ गं गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ क्षें क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ वं वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ यों योगिन्यै नमः, योगिनीमावाहयामि ॥ ४ ॥

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

अनेन नवमावरणार्चनेन भगवत्यः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासस्वतीदेव्यः प्रीयन्ताम् ।

ॐ आवरणदेवताभ्यो नमः, चन्दनं समर्पयामि, इत्यादि—पञ्चोपचारैः पूजनं विधेयम् ।

देव्याः दक्षिणे—ॐ कालाय नमः । ॐ रुद्राय नमः ।

देव्याः वामे—ॐ मृत्यवे नमः । ॐ विनायकाय नमः ।

इत्यावरणपूजनम् ।

आवरणपूजनम् [द्वितीयः प्रकारः]

[यन्त्रपूजनम्]

त्रिकोणाद् बहिः—

'अग्नीशासुरवायव्यमध्यदिक्ष्वङ्गपूजनम् ।'

ॐ ऐं हृदयाय नमो हृच्छक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये ।

ॐ क्लीं शिखायै वषट् शिखाशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं कवचशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः देव्याः पूर्वे ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् अस्त्रशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः सर्वदिक्षु ।

ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

ततस्त्रिकोणयन्त्रे—

ॐ सरस्वतीब्रह्मभ्यां नमः सरस्वतीब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।

ॐ लक्ष्मीहृषीकेशाभ्यां नमो लक्ष्मीहृषीकेशः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ गौरीरुद्राभ्यां नमः गौरीरुद्रः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।

ॐ सिं सिंहाय नमः सिंहः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः देव्याः दक्षिणे ।

ॐ मं महिषाय नमः महिषः श्रीपादुकां पूजयामि नमः देव्या उत्तरे ।

ॐ कां कालाय नमः कालः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ।

ॐ मृं मृत्यवे नमः मृत्युः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ।

ततः श्रीपात्रामृतेन तत्त्वमुद्रया त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् । ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ २ ॥

ततः षट्कोणेषु नन्दजादिशक्तीः पूजयेत् ।

ॐ नं नन्दजायै नमः नन्दजाशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।

ॐ रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेयै ।

ॐ शां शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरीशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ दुं दुर्गायै नमः दुर्गाशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ।

ॐ भीं भीमायै नमः भीमाशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।

ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये ।

हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ ३ ॥

ततोऽष्टपत्रेषु—ब्राह्म्यादिशक्तेः ध्यानम् ।

ॐ ब्राह्मीं हंससमारूढां स्वर्णवर्णां चतुर्भुजाम् ।
चतुर्वक्त्रां त्रिनेत्रां च ब्रह्मकूर्चं च पङ्कजम् ॥
दण्डपद्माक्षसूत्रञ्च दधतीं चारु हासिनीम् ।
जटाजूटधरां देवीं भावयेत् साधकोत्तमः ॥

ॐ आं ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।

ॐ नारायणीं महादीप्तां श्यामां गरुडवाहिनीम् ।
नानालङ्कारसंयुक्तां चारुकेशीं चतुर्भुजाम् ॥ १ ॥
घण्टां शङ्खं कपालं च चक्रं सन्दधतीं पराम् ।
मधुमत्तां मदोल्लोलदृष्टिं सर्वाङ्गसुन्दरीम् ॥ २ ॥

ॐ ईं नारायणी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये ।

ॐ माहेश्वरीं वृषारूढां शुक्लां त्रिनयनान्विताम् ।
कपालं डमरुं चैव वरदाभयशूलकम् ॥
टङ्कं च दधतीं देवीं नानाभरणभूषिताम् ॥

ॐ माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ।

ॐ चामुण्डां चण्डहासां प्रकटितदशनां भीमवक्त्रां त्रिनेत्रां
नीलाम्भोजप्रभाभां प्रमुदिततनुं नारमुण्डालिमालाम् ।
खड्गं शूलं कपालं नरशिखघटितं खेटकं धारयन्तीं
प्रेतारूढां प्रमत्तां मधुमदमुदितां भावयेच्चण्डरूपाम् ॥

ॐ ऋं चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।

ॐ कौमारीं कुङ्कुमाभां च त्रिनेत्रां शिखिसंस्थिताम् ।
चतुर्भुजां शक्तिपाशामङ्कुशाभयधारिणीम् ॥
नानालङ्कारसंयुक्तां प्रमत्तां परिचिन्तये ।

ॐ लृं कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ।

ॐ अपराजितां च पीताभामक्षसूत्रवरप्रदाम् ।
कमलं मातुलुङ्गं च दधतीं परिचिन्तये ॥
ॐ ऐं अपराजिता श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ वाराहीं धूम्रवर्णाभां वराहवदनां शुभाम् ।
खेटकं खड्गमुसलं हलं वेदभुजैर्धृताम् ॥

ॐ औं वाराही श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ।
ॐ नारसिंही नृसिंहेन बिभ्रती सदृशं वपुः ।
ॐ अः नारसिंही श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ।

इति सम्पूज्य, पूर्ववद् योगिनीपात्रामृतेन (विशेषार्घ्यजलेन) त्रिः सकृद् वा तर्पयेत् । ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ ४ ॥

ततोऽष्टभैरवान् ध्यायेत् ।

दधताञ्जनपुञ्जनीलवर्णान् रुरुवेतालशूलदण्डान् लघुदुन्दुभिः संयुक्तां त्रिनेत्रां करिहस्तोपरि हस्तदण्डखण्डैर्गजाकृतिनिवर्तितो गरीयान् ।

भृकुटीसङ्कटितैर्ललाटपट्टैः ललितालिकुलाभकुण्डलग्नान् मुदितान्तःकरणान् सुयौवनाढ्यान् ॥

इति ध्यात्वा,

ॐ ह्रीं असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।

ॐ ह्रीं रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये ।

ॐ ह्रीं चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव श्रीपादुकां नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ।

ॐ ह्रीं क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।

ॐ ह्रीं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ।

ॐ ह्रीं कपालभैरवाय नमः कपालभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ ह्रीं भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ।

ॐ ह्रीं संहारभैरवाय नमः संहारभैरव श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ।

इति सम्पूज्य, पूर्ववद् योगिनीपात्रामृतेन त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् ।

ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥

ततः चतुर्विंशतिदले पूर्वादिषु आग्नेयान्तदलेषु—

ॐ विं विष्णुमायायै नमः विष्णुमाया श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ चें चेतनायै नमः चेतना श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ बुं बुद्ध्यै नमः बुद्धिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ निं निद्रायै नमः निद्रा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ छां छायायै नमः छाया श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ शं शक्त्यै नमः शक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ तृं तृष्णायै नमः तृष्णा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ जां जात्यै नमः जातिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ लं लज्जायै नमः लज्जा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ शां शान्त्यै नमः शान्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ कां कान्त्यै नमः कान्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ धृं धृत्यै नमः धृतिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ वृं वृत्त्यै नमः वृत्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुतिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृतिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ पुं पुष्ट्यै नमः पुष्टिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ दं दयायै नमः दया श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ मां मात्रे नमः माता श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

इति सम्पूज्य, पूर्ववद् योगिनीपात्रामृतेन त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् । ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥ ६ ॥

ततः भूपुरमध्ये प्रसिद्धपूर्वादिदिक्तः आरभ्य,

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ।

ॐ रं अग्नये नमः अग्निः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ।

ॐ मं यमाय नमः यमः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ वं वरुणाय नमः वरुणः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे।

ॐ यं वायवे नमः वायुः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ सं सोमाय नमः सोमः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे।

ॐ हं ईशानाय नमः ईशानः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये।

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः निर्ऋति-वरुणयोर्मध्ये।

ॐ अं ब्रह्मणे नमः ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि नमः पूर्व-ईशानयोर्मध्ये।

इति सम्पूज्य, पूर्ववद् योगिनीपात्रामृतेन तर्पयेत्। ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥ ७॥

ततो भूपुरबाह्ये—

ॐ वं वज्राय नमः वज्रं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे।

ॐ शं शक्तये नमः शक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये।

ॐ दं दण्डाय नमः दण्डः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे।

ॐ खं खड्गाय नमः खड्गः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये।

ॐ पां पाशाय नमः पाशः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे।

ॐ अं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशः (ध्वजा) श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये।

ॐ गं गदायै नमः गदा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये।

ॐ चं चक्राय नमः चक्रं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः अधः (निर्ऋति-वरुणयोर्मध्ये)।

ॐ पं पद्माय नमः पद्म श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऊर्ध्वे (पूर्व-ईशानयोर्मध्ये)।

इति सम्पूज्य, पूर्ववद् योगिनीपात्रामृतेन तर्पयेत्।

ततः : हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्॥ ८॥

इति समर्प्य, ततो देव्याः दक्षिणभागे—

ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ विं विष्णवे नमः विष्णुः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ रुं रुद्राय नमः रुद्रः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ततो महालक्ष्मीदेव्यस्त्राणि पूजयेत्। तद्यथा—

ॐ अं अक्षमालायै नमः अक्षमाला श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ पं पद्माय नमः पद्मं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ सां सायकाय नमः सायकं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ खं खड्गाय नमः खड्गं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ वं वज्राय नमः वज्रं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः।

ॐ ...यै नमः गदा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

...क्राय नमः चक्रं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

...सुराभाजनाय नमः सुराभाजनम् श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ शं शंखाय नमः शंखः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ शं शक्तये नमः शक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ पं परशवे नमः परशुः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ धं धनुषे नमः धनुः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ चं चर्मणे नमः चर्म श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ दं दण्डाय नमः दण्डः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ कुं कुण्डिकायै नमः कुण्डिका श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ घं घण्टायै नमः घण्टा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ पां पाशाय नमः पाशः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

ॐ शूं शूलाय नमः शूलं श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

चक्रस्य बहिः कोणेषु वायव्ये—

ॐ वं वटुकाय नमः वटुकः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये ।

ॐ यां योगिनीभ्यो नमः योगिनी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ।

ॐ गं गणेशाय नमः गणेशः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः मध्ये ।

ॐ दुं दुर्गायै नमः दुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ऐशान्ये ।

ॐ विं विष्णवे नमः विष्णुः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ।

ॐ शिं शिवाय नमः शिवः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ।

ॐ सूं सूर्याय नमः सूर्यः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ।

ॐ गं गणेशाय नमः गणेशः श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ।

इति सम्पूज्य, पूर्ववद्योगिनीपात्रामृतेन तर्पयेत् । ततः हस्तयोः पुष्पाञ्जलिमादाय, भगवति ! दुर्गे ! देवि !

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥ ६ ॥

इति समर्प्य, दुर्गादेव्याः ध्यानं कुर्यात् । तद्यथा—

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुस्सायकं
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

इत्यावरणपूजनम् ।

देव्या अष्टोत्तरशतनामानि

(देव्या अष्टोत्तरशतनामभिस्तुलसी-दूर्वा-अक्षतादिभिः पूजयेत्)

ॐ माहेश्वर्यै नमः । ॐ महादेव्यै नमः । ॐ जयन्त्यै नमः । ॐ सर्वमङ्गलायै नमः । ॐ लज्जायै नमः । ॐ भगवत्यै नमः । ॐ वन्द्यायै नमः । ॐ भवान्यै नमः । ॐ पापनाशिन्यै नमः । ॐ चण्डिकायै नमः । ॐ कालरात्र्यै नमः । ॐ भद्रकाल्यै नमः । ॐ अपराजितायै नमः । ॐ महाविद्यायै नमः । ॐ महामेधायै नमः । ॐ महामायायै नमः । ॐ महाबलायै नमः । ॐ कात्यायन्यै नमः । ॐ जयायै नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ मन्दारवनवासिन्यै नमः । ॐ आर्यायै नमः ।

ॐ गिरिसुतायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः। ॐ महिषासुरघातिन्यै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः। ॐ बुद्धिदायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ वरदायै नमः। ॐ वरवर्णिन्यै नमः। ॐ अम्बिकायै नमः। ॐ सुखदायै नमः। ॐ सौम्यायै नमः। ॐ जगन्मात्रे नमः। ॐ शिवप्रियायै नमः। ॐ भक्तसन्तापसंहर्त्र्यै नमः। ॐ सर्वकामप्रपूरिण्यै नमः। ॐ जगत्कर्त्र्यै नमः। ॐ जगद्धात्र्यै नमः ॐ जगत्पालनतत्परायै नमः। ॐ अव्यक्तायै नमः। ॐ व्यक्तरूपायै नमः। ॐ भीमायै नमः। ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः। ॐ अपर्णायै नमः। ॐ ललितायै नमः। ॐ वैद्यायै नमः। ॐ पूर्णचन्द्रनिभाननायै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ चतुरायै नमः। ॐ चन्द्रायै नमः। ॐ गुणत्रयविभाविन्यै नमः। ॐ हेरम्बजनन्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ त्रिगुणायै नमः। ॐ यशोधारिण्यै नमः। ॐ उमायै नमः। ॐ कलशहस्तायै नमः। ॐ दैत्यदर्पनिषूदिन्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ तुष्ट्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ मत्यै नमः। ॐ वरायुधधरायै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै नमः। ॐ वामायै नमः। ॐ शिववामाङ्गवासिन्यै नमः। ॐ धर्मदायै नमः। ॐ धनदायै नमः। ॐ श्रीदायै नमः। ॐ कामदायै नमः। ॐ मोक्षदायै नमः। ॐ अपरायै नमः। ॐ चित्स्वरूपायै नमः। ॐ चिदानन्दायै नमः। ॐ जयश्रियै नमः। ॐ जयदायिन्यै नमः। ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यायै नमः। ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः। ॐ शर्वाण्यै नमः। ॐ पार्वत्यै नमः। ॐ धन्यायै नमः। ॐ स्कन्दमात्रे नमः। ॐ अखिलेश्वर्यै नमः। ॐ प्रपन्नार्तिहरायै नमः। ॐ देव्यै नमः। ॐ सुभगायै नमः। ॐ कामरूपिण्यै नमः। ॐ निराकारायै नमः। ॐ साकारायै नमः। ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ सुरेश्वर्यै नमः। ॐ शर्वायै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ ध्रुवायै नमः। ॐ कृत्यायै नमः। ॐ मृडान्यै नमः। ॐ भक्तवत्सलायै नमः। ॐ सर्वशक्तिसमायुक्तायै नमः। ॐ शरण्यायै नमः। ॐ सर्वकामदायै नमः।

इति देव्या अष्टोत्तरशतनामानि।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्व्वामः । देवानामसि व्वह्नितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम् ।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत ।
श्रोत्राद् व्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥

घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दीपं दर्शयामि । हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्यम्

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ ऽअकल्पयन् ॥

अन्नं बहुविधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि ।

ततो नैवेद्यं जलेनाभ्युक्ष्य, गन्ध-पुष्पाभ्यामाच्छादयेत् । ततः धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य घण्टां वादयेत् । ततः ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य,

ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठप्रदेशिनीमध्यमाभिः) । ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिः) । ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ-अनामिकाकनिष्ठिकाभिः) । ॐ समानाय स्वाहा (कनिष्ठिकातर्जन्यङ्गुष्ठैः) । ॐ उदानाय स्वाहा (साङ्गुष्ठाभिः सर्वाङ्गुलिभिः) । इति प्रदर्शयेत् । मध्ये-मध्ये आचमनीयं जलं समर्पयामि । उत्तरापोशनार्थे पुनर्नैवेद्यं निवेदयामि । हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि । पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि ।

करोद्वर्त्तनम् (गन्धम्)

ॐ अᳫं॰ शुनाते अᳫं॰ शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥

करोद्वर्त्तनकं देवि ! सुगन्धैः परिवासितैः ।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, करोद्वर्त्तनार्थे गन्धं समर्पयामि । हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि ।

ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वᳫं॰ हसः ॥

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै ।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महास्वरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, फलानि समर्पयामि ।

ताम्बूलम् (पूगफल-एला-लवङ्गसहितम्)

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः
पर्णन्न वेरनुवाति प्रगर्द्धिनः ।
श्येनस्येव ध्रजतो ऽअङ्कसम्परि दधि-
क्राव्णः सहोर्ज्जा तरित्रतः स्वाहा ॥

पूगीफलादिसहितं कर्पूरेण च संयुतम् ।
ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, [1]मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता ।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वरि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, दक्षिणां समर्पयामि ।

नमस्कारः

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

---

१. श्वेतपत्रं च चूर्णं च क्रमुकाणां फलानि च । नारिकेलफलोपेतं मातुलुङ्गसमायुतम् ॥ एला-लवङ्ग-कङ्कोलैर्मुखवासं प्रचक्षते ॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइद्ध्मः शरद्धविः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, नमस्कारं समर्पयामि ।

नवदुर्गापूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिण्यै नमः ब्रह्मचारिणीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ त्रिपुरां त्रिगुणाधारां मार्गज्ञानस्वरूपिणीम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघण्टायै नमः चन्द्रघण्टामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम् ।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः कूष्माण्डामावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ अणिमादिगुणोपेतां मकराकारचक्षुषम् ।
अनन्तशक्तिसम्पन्नां कामाक्षीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः स्कन्दमातरमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जिनीम् ।
अनन्तगुणसम्पन्नां चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायन्यै नमः कात्यायनीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवैर्नमस्कृताम् ।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्र्यै नमः कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ चण्डवीरां चण्डमायां रक्तवीजप्रभञ्जिनीम् ।
समस्तलोकजननीं गायत्रीं पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः महागौरीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुखसौभाग्यदायिनीम ।
कल्याणकारिणीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ८ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदात्र्यै नमः सिद्धिदात्रीमावाहयामि स्थापयामि ।

ॐ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये सर्वकष्टविनाशिनीम् ।
सर्वकामप्रदां देवीं सिद्धिदां पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥

इति नवदुर्गापूजनम् ।

ध्यानम्

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः ध्यानं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पाञ्जलिः

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि
धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र
पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

अखण्डदीपकपूजनम्

देव्या दक्षिणभागे स्थितं घृतदीपं गन्धाक्षतपुष्पेभ्यः पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत् ।

भो दीप ! देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

ज्योतिः पूजनम्

दीपं प्रज्वाल्य, ॐ ज्योतिःस्वरूपायै दुर्गायै नमः, ॐ कुलदेविस्वरूपायै दुर्गायै नमः, इत्यादिना पाद्य-अर्घ्य-आचमनीयजल-गन्ध-अक्षत-पुष्पादिभिः दीपं सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतरांशुकगन्धमाल्ये ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि दुर्गायै दुःखदारिणि ।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

ध्यानम्

प्रधानसाधारविकल्पसंज्ञा
स्वभावभावाद् भुवनत्रयस्य ।
सा विद्यया व्यक्तमपीह माया
ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम् ॥

जयन्तीपूजनम्

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि ! नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि ! नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

[1]कुमारीपूजनम् (नवकन्यापूजनम)

जगत्पूज्यां जगद्वन्द्यां सर्वशक्तिस्वरूपिणीम् ।
नवदुर्गात्मिकां देवीं कुमारीं पूजयाम्यहम् ॥ १ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि ।
त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिमूर्त्यै नमः त्रिमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि ।
कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कल्याण्यै नमः कल्याणीमावाहयामि स्थापयामि ।
अणिमादिगुणोपेतामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ।
अनन्तां शक्तिसम्पन्नां रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः रोहिण्यै नमः रोहिणीमावाहयामि स्थापयामि ।
कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम् ।
कामदां करुणोपेतां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः कालिकायै नमः कालिकामावाहयामि स्थापयामि ।
चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड–मुण्ड–प्रभञ्जिनीम् ।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥ ६ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डिकायै नमः चण्डिकामावाहयामि स्थापयामि ।
सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् ।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शाम्भव्यै नमः शाम्भवीमावाहयामि स्थापयामि ।
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ८ ॥

---

१. (क) कुमार्यश्च प्रतिदिनं अष्टोत्तरशतं नव एका वा यथासम्भवं पूज्याः ।
(ख) कुमारीपूजने द्विवर्षादारभ्य दशवर्षपर्यन्ता कन्या ग्राह्या ।
द्विवर्षाद्या दशाब्दाद्याः कुमारीः परिपूजयेत् ।
एकाब्दायाः प्रीत्यभावो रुद्राब्दा तु विवर्जिता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुख-सौभाग्यदायिनीम् ।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुभद्रायै नमः सुभद्रामावाहयामि स्थापयामि ।

इत्यावाह्य, पाद्य-अर्घ्य-आचमन-वस्त्रालङ्कारादि दत्त्वा, गन्ध-अक्षत-पुष्प-मालादिभिरभ्यर्च्य नवकन्यां भोजयेत्। पश्चात् ताभ्यः दक्षिणां दत्त्वा अभिवादयेत् ।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ध्यानम्

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

वटुकपूजनम्

ॐ देवीर्द्वारो ऽइन्द्रꣳ सङ्घाते
व्वीड्वीर्य्यामन्नवर्द्धयन् ।
आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण च मीवतापार्व्वाणꣳ
रेणुकंकाटं नुदन्तां व्वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तु यजं ॥

"ॐ वं वटुकाय नमः" इत्यनेन वटुकस्य गन्ध-अक्षत-पुष्पमाला-मिष्टान्न-दक्षिणादिभिः पूजनं कृत्वा प्रणमेत् ध्यायेच्च ।

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

दुर्गापुस्तकपूजनम्

ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती ।
यज्ञं व्वष्टु धियावसुः ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि । इति गन्ध-अक्षत-पुष्पादिना दुर्गासप्तशत्याः पूजनं कुर्यात् ।

ब्राह्मणपूजनम्

आचार्य-ब्रह्म-दुर्गापाठजपादिकर्तृणाञ्च ब्राह्मणानां गन्ध-अक्षत-पुष्पादिभिः पूजनं कृत्वा, तेभ्यः दक्षिणां दद्यात् ।

आरार्तिक्यम्

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥१॥

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ।

अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥ २ ॥

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः ।

दिवः सदाᳬसि बृहती वि तिष्ठस ऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः ॥ ३ ॥

ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा

देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता व्विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥४॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥
जय अम्बे० १

माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥
जय अम्बे० २

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प गलमाला, कण्ठनपर साजै ॥
जय अम्बे० ३

केहरि बाहन राजत, खड्ग खपरधारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥
जय अम्बे० ४

कानन कुण्डल शोभित; नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती ॥
जय अम्बे० ५

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥
जय अम्बे० ६

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीजहरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥
जय अम्बे ७

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिवपटरानी ॥
जय अम्बे ८

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, औ बाजत डमरू ॥
जय अम्बे० ९

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता, सुख-सम्पति करता ॥
जय अम्बे० १०

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥
जय अम्बे० ११

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
श्रीमालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥
जय अम्बे० १२

श्रीअम्बेजी की आरति जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥
जय अम्बे० १३

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा-
स्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
(शुक्लयजुर्वेद ३१।१६)

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥
(तैत्तिरीयारण्यक १।३१)

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥

(ऐतरेयब्राह्मण ८।४।१५)

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

(ऐतरेयब्राह्मण ८।४।२१)

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

(शुक्लयजुर्वेद १७।१९)

दुर्गागायत्री

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्यकुमारी च धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥

सेवन्तिकावकुल-चम्पक-पाटलाब्जैः
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसाल-पुष्पैः ।
बिल्व-प्रवाल-तुलसीदल-मञ्जरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि मे प्रसीद ॥

मन्त्रविद्भिर्बुधवरैः श्रद्धापूर्वं समर्पितः ।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिरयं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिगुणात्मिकायै महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपायै जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः
सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति ।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां
प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

प्रणामः (अभिवादनम्)

ॐ दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ।
सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा शिवाम् ॥ १ ॥

सर्वदेवमयीं देवीमीश्वरीं शङ्करप्रियाम् ।
विश्वेश्वरीं विश्ववन्द्यां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥

विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां विन्ध्यस्थाननिवासिनीम् ।
कालीं लक्ष्मीं सरस्वतीं दुर्गां च प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

महादुर्गप्रशमनीं महाभयविनाशिनीम् ।
सर्वसम्पत्प्रदां देवीं तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

नमस्ते देव-देवेशि ! नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि ! नमस्ते शङ्करप्रिये ॥ ५ ॥

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रसन्नेन मया कृतः ॥ ६ ॥

वर-प्रार्थना

रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥ १ ॥

विश्वेश्वरि विश्वपूज्ये पुत्र-पौत्रप्रदायिनि।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं सुख-शान्तिं च देहि मे ॥ २ ॥
भूत-प्रेत-पिशाचेभ्यः रक्षोभ्यः परमेश्वरि।
देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च सर्वेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ ३ ॥

क्षमा-प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥ ३ ॥
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥ ४ ॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ५ ॥
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन् मया कृतम्।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥
दुर्गे देवि जगन्मातः सच्चिदानन्दरूपिणि।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ७ ॥
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
पाहि मां सर्वदा मातः सर्वपापहरा भव ॥ ८ ॥

दुर्गास्तुतिः

ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ १ ॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ २ ॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाऽखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ ३ ॥

या: श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ४ ॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किञ्चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किञ्चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ५ ॥

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापिदोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ६ ॥

यस्याः समस्तसुरतासमुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ७ ॥

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ८ ॥

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ ९ ॥

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ १० ॥

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ ११ ॥

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल—
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १२ ॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १३ ॥

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १४ ॥

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृतीकरोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १५ ॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ १६ ॥

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥ १७ ॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥ १८ ॥

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ १६ ॥

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यञ्च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २० ॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २१ ॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २२ ॥

ॐ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्
विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥ २३ ॥

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ २४ ॥

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥ २५ ॥

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ २६ ॥

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ २७ ॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २८ ॥

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं
कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥ २९ ॥

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ ३० ॥

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३१ ॥

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ३२ ॥

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३३ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३४ ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३५ ॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३६ ॥

इति दुर्गास्तुतिः ।

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेया शक्यत्वात्तवचरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरतलरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशतिमनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपारपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षाशशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जनन यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥ ९ ॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥

इति शङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् ।

जगदम्बामादिशक्तिं दुर्गां देवीं नमाम्यहम् ।
यत्प्रसादादभूत्पूर्णा दुर्गापूजनपद्धतिः ॥

इति दुर्गापूजनपद्धतिः ।



शतचण्डीपाठस्य हवनादिविधिः

सपत्नीको यजमानः हवनकुण्डसमीपे स्थण्डिलसमीपे वा आगत्य उपविशेत्। ततः कुशोदकेनात्मानं हवनसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य स्वस्तिवाचनपूर्वकं सङ्कल्पं कुर्यात्। सङ्कल्पः—

देशकालौ सङ्कीर्त्य "गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य शतचण्डीपाठकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं तद्दशांशहवनादिकर्म करिष्ये।" तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशादिदेवानां यथोपचारैः पूजनं च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, गणेशादिदेवानां यथोपचारैः पूजनं कुर्यात्। अत्र केचित् पुण्याहवाचनमपि कुर्वन्ति। ततो यजमानः आचार्यादिब्राह्मणानामेकतन्त्रेण वरणं कुर्यात्।

वरणसङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अस्मिन् हवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणो आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।'

ततः पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं संस्थाप्य ईशान्यां नवग्रहस्थापनं कृत्वा तत्पूर्वतः कलशं स्थापयेत्। ततः कुशकण्डिका कर्तव्या। कुशकण्डिकानन्तरं कुण्डस्य पूजनम्। तत आघारावाज्यहवनम्।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ।

ततः सङ्कल्पः—इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम। यथादैवतानि सन्तु।

ततः गणेशाम्बिकयोः नवग्रहादीनाञ्च होमः। ततः प्रधानहोमः (दुर्गा-सप्तशतीपाठहोमः)। पश्चाद्—वास्तु-सर्वतोभद्र-योगिनी-क्षेत्रपालाद्यावाहितदेवानां होमः। ततः पीठदेवानाम् आवरणदेवानाञ्च होमः। अनन्तरमष्टोत्तरशतनामभिः दुर्गादेव्याः होमः।

गणेशाम्बिकयोर्होमः

ॐ गणानां त्वा० स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके० स्वाहा ॥ २ ॥

नवग्रहहोमः

(अधिदेवता-प्रत्यधिदेवतादिसहितहोमः)

ॐ आ कृष्णेन रजसा० स्वाहा । इमन्देवाः० स्वाहा । अग्निर्म्मूर्द्धा० स्वाहा । उद्बुध्यस्वाग्ने० स्वाहा । बृहस्पते ऽअति० स्वाहा । अन्नात्परिस्रुतः० स्वाहा । शन्नो देवीः० स्वाहा । कया नश्चित्रः० स्वाहा । केतुं कृण्वन्० स्वाहा ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० स्वाहा । श्रीश्च ते० स्वाहा । यदक्रन्दः० स्वाहा । विष्णोरराटम्० स्वाहा । आ ब्रह्मन्० स्वाहा । स योषा ऽइन्द्रः० स्वाहा । यमाय त्वाङ्गिरस्वते० स्वाहा । कार्षिरसि० स्वाहा । चित्रावसो स्वस्ति ते० स्वाहा । अग्निन्दूतम्० स्वाहा । आपो हि ष्ठा० स्वाहा । स्योना पृथिवि० स्वाहा । इदं विष्णुः० स्वाहा । इन्द्र ऽआसाम्० स्वाहा । अदित्यै रास्नासि० स्वाहा । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः० स्वाहा । नमोऽस्तु सर्पेभ्यः० स्वाहा । ब्रह्म यज्ञानम्० स्वाहा । गणानां त्वा० स्वाहा । अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके० स्वाहा । वायो ये ते० स्वाहा । घृतं घृतपावानः० स्वाहा । यावाङ्कशा मधु० स्वाहा । ॐ वास्तोष्पते० स्वाहा । ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्० स्वाहा । ॐ त्रातारमिन्द्रम्० स्वाहा । स्वन्नो ऽअग्ने तव देव० स्वाहा । यमाय त्वाङ्गिरस्वते० स्वाहा । असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तें० स्वाहा । तत्त्वा यामि० स्वाहा । आनो नियुद्भिः० स्वाहा । वयꣳ सोम० स्वाहा । तमीशानम्० स्वाहा । असमे रुद्रा मेहना० स्वाहा । स्योना पृथिवि० स्वाहा ।

वास्तुहोमः

ॐ शिखिने स्वाहा । पर्जन्याय स्वाहा । जयन्ताय स्वाहा । कुलिशायुधाय स्वाहा । सूर्याय स्वाहा । सत्याय स्वाहा । भृशाय

स्वाहा। आकाशाय स्वाहा। वायवे स्वाहा। पूष्णे स्वाहा। वितथाय स्वाहा। गृहक्षताय स्वाहा। यमाय स्वाहा। गन्धर्वाय स्वाहा। भृङ्गराजाय स्वाहा। मृगाय स्वाहा। पितृभ्यः स्वाहा। दौवारिकाय स्वाहा। सुग्रीवाय स्वाहा। पुष्पदन्ताय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। असुराय स्वाहा। शेषाय स्वाहा। पापाय स्वाहा। रोगाय स्वाहा। अहये स्वाहा। मुख्याय स्वाहा। भल्लाटाय स्वाहा। सोमाय स्वाहा। सर्पेभ्यः स्वाहा। अदित्यै स्वाहा। दित्यै स्वाहा। अद्भ्यः स्वाहा। सावित्राय स्वाहा। जयाय स्वाहा। रुद्राय स्वाहा। अर्यम्णे स्वाहा। सवित्रे स्वाहा। विवस्वते स्वाहा। विबुधाधिपाय स्वाहा। मित्राय स्वाहा। राजयक्ष्मणे स्वाहा। पृथ्वीधराय स्वाहा। आपवत्साय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। चरक्यै स्वाहा। विदार्यै स्वाहा। पूतनायै स्वाहा। पापराक्षस्यै स्वाहा। स्कन्दाय स्वाहा। अर्यम्णे स्वाहा। जृम्भकाय स्वाहा। पिलिपिच्छाय स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। यमाय स्वाहा। निर्ऋतये स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। वायवे स्वाहा। सोमाय स्वाहा। ईशानाय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। अनन्ताय स्वाहा।

सर्वतोभद्रहोमः

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। सोमाय स्वाहा। ईशानाय स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा। अग्नये स्वाहा। यमाय स्वाहा। निर्ऋतये स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। वायवे स्वाहा। अष्टवसुभ्यः स्वाहा। एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। अश्विभ्यां स्वाहा। सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा भूतनागेभ्यः स्वाहा। गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। स्कन्दाय स्वाहा। वृषभाय स्वाहा। शूलाय स्वाहा। महा-कालाय स्वाहा। दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा। दुर्गायै स्वाहा। विष्णवे स्वाहा। स्वधायै स्वाहा। मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा। गणपतये स्वाहा। अद्भ्यः स्वाहा। मरुद्भ्यः स्वाहा। पृथिव्यै स्वाहा। गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। मेरवे स्वाहा। गदायै स्वाहा। त्रिशूलाय स्वाहा। वज्राय स्वाहा। शक्तये स्वाहा। दण्डाय स्वाहा। खड्गाय

स्वाहा। पाशाय स्वाहा। अङ्कुशाय स्वाहा। गौतमाय स्वाहा। भरद्वाजाय स्वाहा। विश्वामित्राय स्वाहा। कश्यपाय स्वाहा। जमदग्नये स्वाहा। वसिष्ठाय स्वाहा। अत्रये स्वाहा। अरुन्धत्यै स्वाहा। ऐन्द्र्यै स्वाहा। कौमार्यै स्वाहा। ब्राह्म्यै स्वाहा। वाराह्यै स्वाहा। चामुण्डायै स्वाहा। वैष्णव्यै स्वाहा। माहेश्वर्यै स्वाहा। वैनायक्यै स्वाहा।

योगिनीहोमः

ॐ गजाननायै स्वाहा। सिंहमुख्यै स्वाहा। गृध्रास्यायै स्वाहा। काकतुण्डिकायै स्वाहा। उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा। हयग्रीवायै स्वाहा। वाराह्यै स्वाहा। शरभाननायै स्वाहा। उलूकिकायै स्वाहा। शिवारावायै स्वाहा। मयूरायै स्वाहा। विकटाननायै स्वाहा। अष्टवक्त्रायै स्वाहा। कोटराक्ष्यै स्वाहा। कुब्जायै स्वाहा। विकटलोचनायै स्वाहा। शुष्कोदर्यै स्वाहा। ललजिह्वायै स्वाहा। श्वदंष्ट्रायै स्वाहा। वानराननायै स्वाहा। ऋक्षाक्ष्यै स्वाहा। केकराक्ष्यै स्वाहा। बृहत्तुण्डायै स्वाहा। सुराप्रियायै स्वाहा। कपालहस्तायै स्वाहा। रक्ताक्ष्यै स्वाहा। शुक्यै स्वाहा। श्येन्यै स्वाहा। कपोतिकायै स्वाहा। पाशहस्तायै स्वाहा। दण्डहस्तायै स्वाहा। प्रचण्डायै स्वाहा। चण्डविक्रमायै स्वाहा। शिशुघ्न्यै स्वाहा। पापहन्त्र्यै स्वाहा। काल्यै स्वाहा। रुधिरपायिन्यै स्वाहा। वसाधयायै स्वाहा। गर्भभक्षायै स्वाहा। शवहस्तायै स्वाहा। आन्त्रमालिन्यै स्वाहा। स्थूलकेश्यै स्वाहा। बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। सर्पास्यायै स्वाहा। प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। दन्तशूककरायै स्वाहा। क्रौञ्च्यै स्वाहा। मृगशीर्षायै स्वाहा। वृषाननायै स्वाहा। व्यात्तास्यायै स्वाहा। धूमनिःश्वासायै स्वाहा। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। तापिन्यै स्वाहा। शोषणीदृष्ट्यै स्वाहा। कोटर्यै स्वाहा। स्थूलनासिकायै स्वाहा। विद्युत्प्रभायै स्वाहा। बलाकास्यै स्वाहा। मार्जार्यै स्वाहा। कटपूतनायै स्वाहा। अट्टाट्टहासायै स्वाहा। कामाक्ष्यै स्वाहा। मृगाक्ष्यै स्वाहा। मृगलोचनायै स्वाहा।

क्षेत्रपालहोमः

ॐ अजराय स्वाहा। व्यापकाय स्वाहा। इन्द्रचौराय स्वाहा।

इन्द्रमूर्तये स्वाहा। उक्षणे स्वाहा। कूष्माण्डाय स्वाहा। वरुणाय स्वाहा। वटुकाय स्वाहा। विमुक्ताय स्वाहा। लिप्तकाय स्वाहा। नीललोकाय स्वाहा। एकदंष्ट्राय स्वाहा। ऐरावताय स्वाहा। ओषधीघ्नाय स्वाहा। बन्धनाय स्वाहा। दिव्यकराय स्वाहा। कम्बलाय स्वाहा। भीषणाय स्वाहा। गवयाय स्वाहा। घण्टाय स्वाहा। व्यालाय स्वाहा। अंशवे स्वाहा। चन्द्रवारुणाय स्वाहा। घटाटोपाय स्वाहा। जटिलाय स्वाहा। क्रतवे स्वाहा। घण्टेश्वराय स्वाहा। विकटाय स्वाहा। मणिमानाय स्वाहा। गणबन्धाय स्वाहा। मुण्डाय स्वाहा। बर्बूकराय स्वाहा। सुधापाय स्वाहा। वैनाय स्वाहा। पवनाय स्वाहा। ढुण्ढिकरणाय स्वाहा। स्थविराय स्वाहा। दन्तुराय स्वाहा। धनदाय स्वाहा। नागकर्णाय स्वाहा। महाबलाय स्वाहा। फेत्काराय स्वाहा। सिंहाय स्वाहा। मृगाय स्वाहा। यक्षाय स्वाहा। मेघवाहनाय स्वाहा। तीक्ष्णाय स्वाहा। अमलाय स्वाहा। शुक्राय स्वाहा।

पीठदेवताहोमः

ॐ आधारशक्त्यै स्वाहा। मूलप्रकृत्यै स्वाहा। कालाग्निरुद्राय स्वाहा। महामण्डूकाय स्वाहा। कूर्माय स्वाहा। वराहाय स्वाहा। अनन्ताय स्वाहा। भूम्यै स्वाहा। अमृतार्णवाय स्वाहा। रत्नद्वीपाय स्वाहा। हेमगिरये स्वाहा। नन्दनोद्यानाय स्वाहा। मणिभूम्यै स्वाहा। रत्नमण्डपाय स्वाहा। कल्पतरवे स्वाहा। रत्नसिंहासनाय स्वाहा। धर्माय स्वाहा। ज्ञानाय स्वाहा। वैराग्याय स्वाहा। ऐश्वर्याय स्वाहा। अधर्माय स्वाहा। अज्ञानाय स्वाहा। अवैराग्याय स्वाहा। अनैश्वर्याय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा। अनन्ताय स्वाहा। वास्तुपुरुषाय स्वाहा। सं सत्याय स्वाहा। रं रजसे स्वाहा। तं तमसे स्वाहा। मां मायायै स्वाहा। विं विद्यायै स्वाहा। उड्डाणपीठेश्वरसहितामुड्डाणपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। मातृकापीठेश्वरसहितां मातृकापीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। जालन्धरपीठेश्वरसहितां जालन्धरपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। कोल्हागिरि-पीठेश्वरसहितां कोल्हागिरिपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। पूर्णगिरिपीठेश्वर-सहितां पूर्णगिरिपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। संहारगिरिपीठेश्वरसहितां

संहारगिरिपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। कोल्हापुरपीठेश्वरसहितां कोल्हापुर-पीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। कामरूपपीठेश्वरसहितां कामरूपपीठेश्वर्यम्बायै स्वाहा। गं गणेशाय स्वाहा। क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा। पां पादुकाभ्यः स्वाहा। वं वटुकेभ्यः स्वाहा। जं जयायै स्वाहा। विं विजयायै स्वाहा। जं जयन्त्यै स्वाहा। अं अपराजितायै स्वाहा। अग्निमुखवेतालाय स्वाहा। प्रेतवाहनवेतालाय स्वाहा। बालामुखवेतालाय स्वाहा। धूम्राक्षवेतालाय स्वाहा। आनन्दकन्दाय स्वाहा। संविन्नालाय स्वाहा। दलेभ्यः स्वाहा। केसरेभ्यः स्वाहा। कर्णिकायै स्वाहा। अं सूर्यमण्डलाय स्वाहा। उं सोममण्डलाय स्वाहा। मं वह्नि-मण्डलाय स्वाहा। अं आत्मने स्वाहा। उं अन्तरात्मने स्वाहा। पं परमात्मने स्वाहा। उं ज्ञानात्मने स्वाहा। विं विष्णुमायायै स्वाहा। चें चेतनायै स्वाहा। बु वुद्ध्यै स्वाहा। निं निद्रायै स्वाहा। क्षुं क्षुधायै स्वाहा। छां छायायै स्वाहा। शं शक्त्यै स्वाहा। तृं तृष्णायै स्वाहा। क्षां क्षान्त्यै स्वाहा। जां जात्यै स्वाहा। लं ललितायै स्वाहा। शां शान्त्यै स्वाहा। श्रं श्रद्धायै स्वाहा। कां कान्त्यै स्वाहा। लं लक्ष्म्यै स्वाहा। धृं धृत्यै स्वाहा। वृं वृद्ध्यै स्वाहा। स्मृं स्मृत्यै स्वाहा। दं दयायै स्वाहा। तुं तुष्ट्यै स्वाहा। पुं पुष्ट्यै स्वाहा। मां मातृकायै स्वाहा। भ्रां भ्रान्त्यै स्वाहा। ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय स्वाहा। सर्वात्मसंसर्गयोगपीठात्मने स्वाहा।

आवरणदेवताहोमः

ऐं महाकाल्यै विच्चे। ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे। क्लीं महासरस्वत्यै विच्चे। ह्रूं महिषाय स्वाहा। क्षं सिंहाय स्वाहा। गं गणपतये स्वाहा। ह्रूं कालाय स्वाहा। ह्रूं मृत्यवे स्वाहा। ह्रैं रुद्राय स्वाहा। ह्रौं गौर्यै स्वाहा। श्रीं विष्णवे स्वाहा। श्रीं लक्ष्म्यै स्वाहा। ऐं ब्रह्मणे स्वाहा। ऐं सरस्वत्यै स्वाहा। ह्रां हृदयाय स्वाहा। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं शिखाय स्वाहा। ह्रैं कवचाय हुं स्वाहा। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा। ह्रः अस्त्राय फट् स्वाहा। गुं गुरुभ्यः स्वाहा। पं परमगुरुभ्यः स्वाहा। पं परमेष्ठिगुरुभ्यः स्वाहा। हरये स्वाहा। हराय स्वाहा। गणेशाय

स्वाहा। नन्दजायै स्वाहा। रक्तदन्तिकायै स्वाहा। शाकम्भर्यै स्वाहा। दुर्गायै स्वाहा। भीमायै स्वाहा। भ्रामर्यै स्वाहा। ब्राह्म्यै स्वाहा। माहेश्वर्यै स्वाहा। कौमार्यै स्वाहा। वैष्णव्यै स्वाहा। वाराह्यै स्वाहा। इन्द्राण्यै स्वाहा। नारसिंह्यै स्वाहा। चामुण्डायै स्वाहा। अं असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा। रुं रुरुभैरवाय स्वाहा। चं चण्डभैरवाय स्वाहा। क्रों क्रोधभैरवाय स्वाहा। उं उन्मत्तभैरवाय स्वाहा। कं कपाल-भैरवाय स्वाहा। भीं भीषणभैरवाय स्वाहा। सं संहारभैरवाय स्वाहा। लं इन्द्राय स्वाहा। रं अग्नये स्वाहा। मं यमाय स्वाहा। क्षं निर्ऋतये स्वाहा। वं वरुणाय स्वाहा। यं वायवे स्वाहा। सं सोमाय स्वाहा। हं ईशानाय स्वाहा। वज्राय स्वाहा। शक्त्यै स्वाहा। दण्डाय स्वाहा। खड्गाय स्वाहा। पाशाय स्वाहा। अङ्कुशाय स्वाहा। गदायै स्वाहा। त्रिशूलाय स्वाहा।

अष्टोत्तरशतनामभिर्दुर्गादेवीहोमः

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। महादेव्यै स्वाहा। जयन्त्यै स्वाहा। सर्वमङ्ग-लायै स्वाहा। लज्जायै स्वाहा। भगवत्यै स्वाहा। वन्द्यायै स्वाहा। भवान्यै स्वाहा। पापनाशिन्यै स्वाहा। चण्डिकायै स्वाहा। कालरात्र्यै स्वाहा। भद्रकाल्यै स्वाहा। अपराजितायै स्वाहा। महाविद्यायै स्वाहा। महामेधायै स्वाहा। महामायायै स्वाहा। महाबलायै स्वाहा। कात्यायन्यै स्वाहा। जयायै स्वाहा। दुर्गायै स्वाहा। मन्दारवनवासिन्यै स्वाहा। आर्यायै स्वाहा। गिरिसुतायै स्वाहा। धात्र्यै स्वाहा। महिषासुरघातिन्यै स्वाहा। सिद्धिदायै स्वाहा। बुद्धिदायै स्वाहा। नित्यायै स्वाहा। वरदायै स्वाहा। वरवर्णिन्यै स्वाहा। अम्बिकायै स्वाहा। सुखदायै स्वाहा। सौम्यायै स्वाहा। जगन्मात्रे स्वाहा। शिवप्रियायै स्वाहा। भक्तसन्ताप-संहर्त्र्यै स्वाहा। सर्वकामप्रपूरिण्यै स्वाहा। जगत्कर्त्र्यै स्वाहा। जगद्धात्र्यै स्वाहा। जगत्पालनतत्परायै स्वाहा। अव्यक्तायै स्वाहा। व्यक्तरूपायै स्वाहा। भीमायै स्वाहा। त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा। अपर्णायै स्वाहा। ललितायै स्वाहा। वेद्यायै स्वाहा। पूर्णचन्द्रनिभाननायै स्वाहा। चामुण्डायै स्वाहा। चतुरायै स्वाहा। चन्द्रायै स्वाहा। गुणत्रयविभाविन्यै

स्वाहा। हेरम्बजनन्यै स्वाहा। काल्यै स्वाहा। त्रिगुणायै स्वाहा। यशोधारिण्यै स्वाहा। उमायै स्वाहा। कलशहस्तायै स्वाहा। दैत्यदर्पनिषूदिन्यै स्वाहा। बुद्ध्यै स्वाहा। कान्त्यै स्वाहा। क्षमायै स्वाहा। शान्त्यै स्वाहा। पुष्ट्यै स्वाहा। तुष्ट्यै स्वाहा। धृत्यै स्वाहा। मत्यै स्वाहा। वरायुधधरायै स्वाहा। धीरायै स्वाहा। गौर्यै स्वाहा। शाकम्भर्यै स्वाहा। शिवायै स्वाहा। अष्टसिद्धिप्रदायै स्वाहा। वामायै स्वाहा। शिववामाङ्गवासिन्यै स्वाहा। धर्मदायै स्वाहा। धनदायै स्वाहा। श्रीदायै स्वाहा। कामदायै स्वाहा। मोक्षदायै स्वाहा। अपरायै स्वाहा। चित्स्वरूपायै स्वाहा। चिदानन्दायै स्वाहा। जयश्रियै स्वाहा। जयदायिन्यै स्वाहा। सर्वमङ्गलमङ्गल्यायै स्वाहा। जगत्त्रयहितैषिण्यै स्वाहा। शर्वाण्यै स्वाहा। पार्वत्यै स्वाहा। धन्यायै स्वाहा। स्कन्दमात्रे स्वाहा। अखिलेश्वर्यै स्वाहा। प्रपन्नार्तिहरायै स्वाहा। देव्यै स्वाहा। सुभगायै स्वाहा। कामरूपिण्यै स्वाहा। निराकारायै स्वाहा। साकारायै स्वाहा। महाकाल्यै स्वाहा। सुरेश्वर्यै स्वाहा। शर्वायै स्वाहा। श्रद्धायै स्वाहा। ध्रुवायै स्वाहा। कृत्यायै स्वाहा। मृडान्यै स्वाहा। भक्तवत्सलायै स्वाहा। सर्वशक्तिसमायुक्तायै स्वाहा। शरण्यायै स्वाहा। सर्वकामदायै स्वाहा।

[1]अग्निपूजनम्

'ॐ अग्ने नय०' इति मन्त्रेण "ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा–स्वधायुताय मृडाग्नये वैश्वानराय नमः" इत्यग्निं गन्ध–पुष्पादिना सम्पूजयेत्।

स्विष्टकृद्धोमः

ततो हुतशेषद्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। इति हुतशेषमाज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

---

१. पूजा स्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा।
श्रेयः सम्पाद्य दानं च ह्यभिषेको विसर्जनम्॥

भूरादि-नवाहुतिभिर्होमः

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ १ ॥
ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ॥ २ ॥
ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ॥ ३ ॥
ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य० इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥
ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेऽवमो० इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥
ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च० इदमग्नये अयसे न मम ॥ ६ ॥
ॐ ये ते शतं वरुण० इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥
ॐ उदुत्तमं वरुण० इदं वरुणायादित्यादितये च न मम ॥ ८ ॥
ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥

दशदिक्पालबलिः

ॐ त्रातारमिन्द्रम्० इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।
भो इन्द्र ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता० ।
अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ १ ॥
ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देव० अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो अग्ने ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० सपरिवारस्य आयुःकर्ता० ।
अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ॥ २ ॥
ॐ यमाय त्वा० । यमाय साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो यम ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ॥ ३ ॥

ॐ असुन्वन्तमयजमान० । निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो निर्ऋते ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् ॥ ४ ॥

ॐ तत्त्वा यामि० । वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो वरुण ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् ॥ ५ ॥

ॐ आनो नियुद्भिः० । वायवे साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो वायो ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम् ॥ ६ ॥

ॐ वयर्ठ० सोम० । सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो सोम ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ॥ ७ ॥

ॐ तमीशानम्० । ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो ईशान ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ॥ ८ ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना० । ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो ब्रह्मन् ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् ॥ ९ ॥

ॐ स्योना पृथिवि० । अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय० ।
भो अनन्त ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।
अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम् ॥ १० ॥

दशदिक्पालानामेकतन्त्रेण बलिः

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे

स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहाव्राच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहाव्राच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहाव्राच्यै दिशे स्वाहा ॥

इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि ।

भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः ! स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत ।

अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् ।

गणेशबलिः

ॐ गणानां त्वा० । गणपतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो गणपते ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।

अनेन बलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् ।

वरुणबलिः

ॐ तत्त्वा यामि० । वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो वरुण ! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य० ।

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् ।

षोडशमातृकाबलिः

ॐ समख्ये देव्या० । गौर्यादिषोडशमातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि ।

भो भो गौर्यादिषोड़शमातरः ! स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत ।

अनेन बलिदानेन गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् ।

श्रियादिसप्तघृतमातृकाबलिः

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारम्० । श्रियादिसप्तघृतमातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः एतान् सदीपदधि-माषभक्तबलीन् समर्पयामि ।

भो भो श्रियादिसप्तघृतमातरः ! स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत ।

अनेन बलिदानेन श्रियादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम् ।

नवग्रहबलिः

ॐ आकृष्णेन रजसा० । सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवता–प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधि-माषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो सूर्य ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता० ।

अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम् ॥ १ ॥

ॐ इमन्देवाः० । सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमारूपाधिदेवता–प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधि-माषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो सोम ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता० ।

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ॥ २ ॥

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः० । भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायु-धाय सशक्तिकाय स्कन्दभूरूमिपाधिदेवता–प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो भौम ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता० ।

अनेन बलिदानेन भौमः प्रीयताम् ॥ ३ ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने० । बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायणविष्णुरूपाधिदेवता—प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो बुध ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता० ।

अनेन बलिदानेन बुधः प्रीयताम् ॥ ४ ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति० । बृहस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्ररूपाधिदेवता–प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो बृहस्पते ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।

अनेन बलिदानेन बृहस्पतिः प्रीयताम् ॥ ५ ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतः० । शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवता—प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो शुक्र ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।

अनेन बलिदानेन शुक्रः प्रीयताम् ॥ ६ ॥

ॐ शन्नो देवीः० । शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय यमप्रजापतिरूपाधिदेवता–प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो शनैश्चर ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ॥

अनेन बलिदानेन शनैश्चरः प्रीयताम् ॥ ७ ॥

ॐ कया नश्चित्रः० । राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवता–प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो राहो ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।
अनेन बलिदानेन राहुः प्रीयताम् ।। ८ ।।

ॐ केतुं कृण्वन्० । केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय चित्रगुप्तब्रह्मरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय एतं सदीपदधिमाषभक्त-बलिं समर्पयामि ।
भो केतो ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।
अनेन बलिदानेन केतुः प्रीयताम् ।। ९ ।।

पञ्चलोकपालबलिः

ॐ गणानां त्वा० । गणपतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय०
भो गणपते ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।
अनेन बलिदानेन गणपतिः प्रीयताम् ।। १ ।।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके० । दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै० ।
भो दुर्गे ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री० ।
अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयताम् ।। २ ।।

ॐ वायो ये ते० । वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय० ।
भो वायो ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।
अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम् ।। ३ ।।

ॐ घृतं घृतपावानः० । आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय० ।
भो आकाश ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।
अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयताम् ।। ४ ।।

ॐ यावाङ्कशा० । अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां एतं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।
भो अश्विनौ ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य

आयुःकर्तारौ क्षेमकर्तारौ शान्तिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ तुष्टिकर्तारौ वरदौ भवतः ।

अनेन बलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम् ॥ ५ ॥

वास्तोष्पतिबलिः

ॐ वास्तोष्पते० । वास्तोष्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय० ।

भो वास्तोष्पते ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० ।

अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम् ॥ ६ ॥

एकतन्त्रेण नवग्रहबलिः

ॐ ग्रहा ऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम् । तेषां व्विशिप्प्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता–प्रत्यधिदेवता–गणपत्यादि–पञ्चलोकपाल–वास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि ।

भो भो सूर्यादिनवग्रहाः ! अधिदेवता–प्रत्यधिदेवताः पञ्चलोकपाल–वास्तोष्पतिसहिताः स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारस्तुष्टिकर्तारो वरदा भवत ।

अनेन बलिदानेन सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम् ।

वास्तुबलिः

ॐ वास्तोष्पते० । शिख्यादिसहितवास्तोष्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो शिख्यादिसहितवास्तोष्पते इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य० ।

अनेन बलिदानेन शिख्यादिसहितवास्तोष्पतिः प्रीयताम् ।

योगिनीबलिः

ॐ योगे योगे० । महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वतीसहित-गजाननाद्यावाहितचतुःषष्टियोगिनीभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितचतुःषष्टियोगिन्यः ! इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत ।

अनेन बलिदानेन महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितगजानन-नाद्यावाहितचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् ।

असंख्यातरुद्रबलिः

ॐ नमस्ते रुद्र० । रुद्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय० ।

भो रुद्र ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः-कर्ता० ।

अनेन बलिदानेन असंख्यातरुद्रः प्रीयताम् ।

विष्णुबलिः

ॐ इदं विष्णुः० । विष्णवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय० ।

भो विष्णो ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता० ।

अनेन बलिदानेन विष्णुः प्रीयताम् ।

दुर्गाबलिः (प्रधानदेवताबलिः)

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके० । दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै० ।

भो दुर्गे! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदा भव।

अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयताम्।

क्षेत्रपालबलिः

एकस्मिन् वंशादिपात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि मनुष्याहारचतुर्गुणं द्विगुणं वा माष-दध्योदनं वा जलपात्रं च निधाय चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य,

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥

इति 'क्षेत्रपालाय नमः' इत्युक्त्वा क्षेत्रपालं षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूत-प्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥ १॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥ २॥

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनीगणसहिताय एतं सदीपदधि-माषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो क्षेत्रपाल! सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः (नगाः)॥ १॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥ २॥

जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरा नगाः ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ ३ ॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः ॥ ४ ॥

भूतानि यानीह वसन्ति तानि
बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु
रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र ॥ ५ ॥

ततो दुर्ब्राह्मणेन नापितेन (शूद्रेण) वा क्षेत्रपालबलिं गृहीत्वा यजमानमस्तकोपरि सकृत् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निःक्षिपेत् । ततो आचार्यः—

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्रप्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा ॥

इति मन्त्रेण यजमानमस्तकोपरि जलं प्रक्षिपेत् ।

पूर्णाहुतिः

यजमानः रक्तवस्त्रवेष्टितं श्रीफलं (नारिकेलफलं) स्रुच्यामुपरि संस्थाप्य 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति यथोपचारद्रव्यैः श्रीफलं सम्पूजयेत् । पश्चात् श्रीफलसहितां स्रुचीं गृहीत्वा उत्थाय पूर्णाहुतिं कुर्यात् ।

पूर्णाहुतिमन्त्राः

ॐ समुद्राद्दूर्म्मिर्म्मधुमाँ२॥ ऽउदारदुपाᳬशुना सममृतत्वमानट्॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥ १॥

वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः॥ उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद् गौर ऽएतत्॥ २॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य॥ त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२॥ ऽआविवेश॥ ३॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्॥ इन्द्र ऽएकᳬ सूर्य्य ऽएकञ्जजान वेनादेकᳬ स्वधया निष्टतक्षुः॥ ४॥

एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे॥ घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य ऽआसाम्॥ ५॥

सम्म्यक स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः॥ एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः॥ ६॥

सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः॥ घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्युः स्मयमानासो ऽअग्निम् ॥ घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ ८ ॥

कन्या ऽइव व्वहतुमेतवा ऽउ अञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ॥ यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते ॥ ९ ॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्द्रा द्द्रविणानि धत्त ॥
इमं यज्ञन्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥

धामन्ते व्विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्द्रे हृद्युन्तरायुषि ॥ अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्म्मिम् ॥ ११ ॥

मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम् ॥ कविठं० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ १२ ॥

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्द्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ॥ घृतेन त्वं तन्वं व्वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १३ ॥

पूर्ण्णा दर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत ॥
व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जठं० शतक्क्रतो ॥ १४ ॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम ।

वसोर्द्धाराहोममन्त्राः

ॐ समास्त्वाग्न ऽऋतवो व्वर्द्धयन्तु संव्वत्सरा ऽऋषयो यानि सत्या ॥ सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन व्विश्वा ऽआ भाहि प्प्रदिशश्चतस्रः ॥ १ ॥

सं चेद्ध्यस्वाग्ने प्प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ॥ मा च रिषदुपसत्ता ते ऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ॥ २ ॥

त्वामग्ने व्वृणते ब्ब्राह्मणा ऽइमे शिवो ऽअग्ने संवरणे भवा नः ॥ सपत्नहा नो ऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्प्रयुच्छन् ॥ ३ ॥

इहैवाग्ने ऽअधि धारया रयिं मा त्वा निक्रन् पूर्व्वचितो निकारिणः ॥ क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुब्भ्यमुपसत्ता व्वर्द्धतां ते ऽअनिष्टृतः ॥ ४ ॥

क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सꣳ रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ॥ सजातानां मद्ध्यमस्त्था ऽएधि राज्ञामग्ने व्विहव्यो दीदिहीह ॥ ५ ॥

अति निहो ऽअति स्रिधोऽत्त्यचित्तिमत्त्यरातिमग्ने ॥ व्विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मब्भ्यꣳ सहवीराꣳ रयिं दाः ॥ ६ ॥

अनाधृष्यो जातवेदा ऽअनिष्टृतो व्विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ॥ व्विश्वा ऽआशाः प्प्रमुञ्चन्मानुषीर्ब्भियः शिवेभिरद्य परिपाहि नो व्वृधे ॥ ७ ॥

बृहस्प्पते सवितर्बोधयैनꣳ सꣳशितञ्चित्सन्तराꣳ सꣳ

शिशाधि ॥ वर्द्धयैनं महते सौभगाय विश्वे ऽएनमनु मदन्तु देवाः ॥ ८ ॥

अमुत्रभूयादध यद्यमस्य बृहस्पते ऽअभिशस्तेरमुञ्चः ॥
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥९॥

ॐ विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाᳪसि ॥ यो ऽअस्कभायदुत्तरᳪ सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥ १ ॥

दिवो वा विष्ण ऽउत वा पृथिव्या महो वा विष्ण ऽउरोरन्तरिक्षात् ॥ उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद् विष्णवे त्वा ॥ २ ॥

प्र तद् विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ ३ ॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ४ ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ आददे नार्यसीदमहᳪ रक्षसां ग्रीवा ऽअपि कृन्तामि ॥ बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद ॥ ५ ॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।
भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ ६ ॥

सन्ते पयाᳪसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ॥ आप्यायमानो ऽअमृताय सोम दिवि श्रवाᳪस्युत्तमानि धिष्व ॥ ७ ॥

आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरꣳशुभिः। भवा नः सप्रथस्तमः सखा वृधे ॥ ८ ॥

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ॥ सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा ॥ १ ॥

शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥ २ ॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च ॥
मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥ ३ ॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च ॥
धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः ॥ ४ ॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च ॥
अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥ ५ ॥

ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन ॥ मितासश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥ ६ ॥

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च ॥
क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥ ७ ॥

इन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् ॥ एवमिमं यजमानन्दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥ ८ ॥

इमᳪं स्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मद्ध्ये ॥
उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रियᳪं सदनमाविशस्व ॥ ९ ॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥ १० ॥

ॐ वाजश्च० । प्राणश्च० । ओजश्च० । ज्यैष्ठ्यं च० । सत्त्यं च० । ऋतं च० । यन्ता च० । शं च० । ऊर्क् च० । रयिश्च० । व्वित्तं च० । व्व्रीहयश्च० । अश्म्मा च० । अग्निश्च म ऽआपश्च० । व्वसु च० । अग्निश्च म ऽइन्द्रश्च० । मित्त्रश्च० । पृथिवी च० । अᳪं शुश्च० । आग्रयणश्च० । स्रुचश्च० । अग्निश्च मे घर्मश्च मे० । व्व्रतञ्च० । एका च० । चतस्रश्च० । त्र्यविश्च० । पष्ठवाट् च० । व्वाजाय स्वाहा० । आयुर्य्यज्ञेन० ॥

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ ११ ॥

इदमग्नये वैश्वानराय न मम ।

अग्नेः प्रदक्षिणम्

ततो यजमानः—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् व्विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान् । युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम ॥

इत्यनेन मन्त्रेणाग्निं परिक्रम्य अग्नेः पश्चिमदिशि प्राङ्मुख-मुपविशेत् ।

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

तत आचार्यः हवनकुण्डस्य स्थण्डिलस्य वा ईशानकोणात् स्रुवेण भस्मानीय प्रथमं स्वशरीरे ततो यजमानशरीरे च भस्मानुलेपनं कुर्यात् । '*ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः*' इति ललाटे । '*कश्यपस्य त्र्यायुषम्*' इति ग्रीवायाम् । '*यद्देवेषु त्र्यायुषम्*' इति दक्षिणबाहुमूले । '*तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्*' इति हृदि ।

संस्रवप्राशनम् । आचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्र-प्रतिपत्तिः । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् । पूर्णपात्रग्रहणानन्तरं '*ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु*' इति ब्रह्मा वदेत् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । पश्चादग्नेः पश्चिमतः प्रणीताविमोकः । "*ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्*" इत्यनेन यजमानमुपयमनकुशैर्मार्जयेत् । तत उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ।

अवभृथस्नानं गोदानं दक्षिणादानादिकं च

यजमानः आचार्यादिब्राह्मणैः सह अवभृथस्नानार्थं नद्यादौ गत्वा अवभृथस्नानं कुर्यात् । अथवा स्वगृहे एव प्रधानकलशोदकेन स्नानं कुर्यात् । ततो यजमानः आचार्याय गोदानं प्रधानपीठादिकं च दद्यात् । पश्चात् ब्रह्मादिऋत्विग्भ्यः वृष-अश्व-रथ-गन्त्रीं (पालकीम्) च दद्यात् । अनन्तरं आचार्यादिऋत्विग्भ्यः अन्येभ्यश्च सुवर्णं दद्यात् ।

ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पं भूयसीदक्षिणासङ्कल्पं च कृत्वा छायापात्र-दानं कुर्यात् । तत आचार्यः यजमानाय श्रेयोदानं दद्यात् । आचार्यः "कृतस्य सनवग्रहमखशतचण्डीयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये" इति सङ्कल्प्य, 'शिवा आपः सन्तु' इति यजमानदक्षिणहस्ते जलं दद्यात् । 'सौमनस्यमस्तु' इति पुष्पं दद्यात् । 'अक्षतं चारिष्टं चास्तु' इति अक्षतान् दद्यात् । तत

आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय "भवन्नियोगेन मया अस्मिन् शतचण्डीयागकर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं दुर्गापाठ-जप-हवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।" तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव, इत्युक्त्वा यजमानाय अर्पयेत्। 'भवामि' इति यजमानो ब्रूयात्।

उत्तरपूजनम्

ततो यजमानः प्रधानपीठादीनां विशेषतः श्रीभगवत्याः दुर्गायाः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

कूष्माण्डबलिदानम्

आचम्य प्राणानायम्य। 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०' इत्यात्मानं सम्प्रोक्ष्य दुर्गादेव्याः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्। ततः सङ्कल्पं कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य "गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकं सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थं च श्रीदुर्गादेवीप्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये।" ततः कूष्माण्डबलिं गन्धाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूजयेत्।

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्॥ १॥
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम्।
चामुण्डाबलिरूपाय बले! तुभ्यं नमोऽस्तु ते॥ २॥
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद् यज्ञे वधोऽवधः॥ ३॥

इति बलिमभिमन्त्रयेत्। ततः *'ऐं ह्रीं श्रीम्'* इति गन्धाक्षतपुष्पाणि क्षिपेत्।

'रसना त्वं चण्डिकाया सुरलोकप्रसाधकः' इति।

ततः *'ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट्'* इति खड्गं (शस्त्रं) सम्पूज्य स्वदक्षिणहस्ते खड्गं गृहीत्वा दुर्गादेवीं स्मरेत् प्रणमेच्च। ततः *"ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि (वज्रेश्वरि) लोहदण्डायै नमः"* इत्युक्त्वा कूष्माण्डबलिं

कर्त्तयेत् (छेदयेत्)। पश्चात् "ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम्" इति देव्यै अर्घं निवेदयेत्। ततः कर्त्तितस्य कूष्माण्डबलेः पञ्च भागान् कृत्वा पूतनादिभ्यः बलिं दद्यात्। तद्यथा—पूतनायै बलिभागं निवेदयामि। चरक्यै बलिभागं निवेदयामि। पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि। विदार्यै बलिभागं निवेदयामि। क्षेत्रपालाय बलिभागं निवेदयामि।

अथवा—माषपिष्टमयं पशुं कृत्वा खड्गेन कर्त्तयित्वा स्कन्दाय विशिखाय च बलिं दद्यात्। तद्यथा—स्कन्दाय पश्वर्धं समर्पयामि। विशिखाय पश्वर्धं समर्पयामि।

'ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर ॐ हुं फट् मर्द मर्द हुम्' इति बलिशेषभागं गृहाद् बहिर्दद्यात्। तत आचमनं मार्जनादिकं च कृत्वा दुर्गादेवीं प्रार्थयेत्।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १ ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

रूपं देहि जयं देहि भगं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ ५ ॥

ततः कर्पूरार्तिक्यं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं च कुर्यात्।

तर्पणं मार्जनं च

ततो ब्राह्मणाः बृहत्पात्रे दुग्धं जलं वा दत्त्वा कुशैः दूर्वाभिर्वा 'ॐ दुर्गां तर्पयामि' इति तर्पणम्, 'ॐ दुर्गां मार्जयामि' इति च मार्जनं कुर्युः। ततश्छायापात्रदानम्।

अभिषेकः

तत आचार्यं रुद्रकलश-प्रधानकलशयोर्जलमेकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य तज्जलेन दूर्वा-कुशा-आम्रपल्लवैः प्राङ्मुखं सपरिवारं यजमानमभिषिञ्चेत्।

अभिषेकमन्त्राः

ॐ देवस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ॥ सर॑स्वत्यै व्वा॒चो य॒न्तुर्य॒न्त्रिये॑ दधा॒मि बृह॒स्पते॑ष्ट्वा साम्म्रा॑ज्येना॒भिषि॑ञ्चाम्यसौ ॥ १ ॥

देवस्य त्वा०। सर॑स्वत्यै व्वा॒चो य॒न्तुर्य॒न्त्रेणा॒ग्नेः साम्म्रा॑ज्येना॒भिषि॑ञ्चामि ॥ २ ॥

देवस्य त्वा०। अ॒श्विनो॒र्भैष॑ज्येन॒ तेज॑से ब्रह्मवर्च॒साया॒भिषि॑ञ्चामि॒ सर॑स्वत्यै॒ भैष॑ज्येन व्वी॒र्या॒यान्ना॒द्याया॒भिषि॑ञ्चामीन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॒ बला॑य श्रि॒यै यश॑से॒ऽभिषि॑ञ्चामि ॥ ३ ॥

ॐ शिरो॑ मे॒ श्रीर्यशो॒ मुखं॒ त्विषिः॒ केशा॑श्च॒ श्मश्रू॑णि। राजा॑ मे प्रा॒णो अ॒मृत॑ꣳ स॒म्म्राट् चक्षु॒र्व्वि॒राट् श्रोत्र॑म् ॥ ४ ॥

जि॒ह्वा मे॑ भ॒द्रं व्वाङ् म॒हो मनो॑ म॒न्न्युः स्व॒राड् भाम॑ः।
मोदा॑ः प्र॒मोदा॒ अ॒ङ्गुली॒रङ्गा॑नि मि॒त्रं मे॒ सह॑ः ॥ ५ ॥

बा॒हू मे॒ बल॑मिन्द्रि॒यꣳ हस्तौ॑ मे॒ कर्म्म॑ व्वी॒र्य॒म्।
आ॒त्मा क्ष॒त्रमुरो॒ मम॑ ॥ ६ ॥

पृ॒ष्ठीर्म्मे॑ रा॒ष्ट्रमु॒दर॒मꣳसौ॑ ग्री॒वाश्च॒ श्रोणी॑।
ऊ॒रू अ॒रत्नी॑ जानु॑नी॒ व्विशो॑ मेऽङ्गा॑नि स॒र्व्वत॑ः ॥ ७ ॥
नाभि॑र्म्मे चि॒त्तं व्वि॒ज्ञानं॑ पा॒युर्म्मेऽप॑चिति॒र्भ॒सत्।

आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ॥ ८ ॥

प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे ॥ ९ ॥

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा ॥ १० ॥

प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनुवाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ १२ ॥

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः।
रक्षा तोकमुतत्मना ॥ १३ ॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्ज्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ॥ १४ ॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ॥ १५ ॥

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥ १६ ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ १७ ॥

ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ १८ ॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ १९ ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ २० ॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥ २१ ॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न ऽआ सुव ॥ २२ ॥

पुराणमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजाः ॥ ५ ॥

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष–राक्षस–पन्नगाः ॥ ६ ॥

ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥

अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ते ॥ ८ ॥

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥

क्षमा–प्रार्थना

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां देवि चण्डेशि सर्वपापहरा भव ॥ १ ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥

यत्पूजितं मया देवि भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् ।
तत्सर्वं परिगृह्णन्तु दुर्गाद्याः सर्वदेवताः ॥ ३ ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ४ ॥

जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ ५ ॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ६ ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ७ ॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ८ ॥

कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन्मया कृतम् ।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरि ॥ ९ ॥

देवविसर्जनम्

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ १ ॥

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा । एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवꣳ सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥

उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ।
कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ १ ॥

दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥

पूजामिमां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ ३ ॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ ४ ॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन ॥ ५ ॥

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ ६ ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ ७ ॥

यजमानः—'ॐ विष्णवे नमः' इति त्रिर्वदेत्।

यजमानरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म ऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ॥ नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः ॥

यजमान-तिलककरणम्

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये ॥

इति मन्त्रेण आचार्यः यजमानमस्तके कुङ्कुमादिना तिलकं कुर्यात्।

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत् ॥

इति मन्त्रेण तिलकमध्ये अक्षतान् विदध्यात्।

यजमानायाशीर्वादः

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं व्वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ १ ॥

ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ॥ अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा व्वि रोहतात् ॥ २ ॥

ॐ व्विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व । श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती व्वाम-मश्नुतः । पुमान् पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा व्विश्वाहारप ऽएधते गृहे ॥ ३ ॥

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ ४ ॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ॥
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ ५ ॥

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा ।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ १ ॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ २ ॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ ३ ॥

यजमानपत्न्या आशीर्वादः

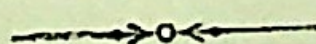
ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्य ऽआयुर्म्मे दाः पुत्रवती दक्षिणत ऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मे दा ऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः ॥ विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्य ऽओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥ १ ॥

ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे । तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् ॥२॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥ ३ ॥

ततो यजमानाय प्रसादार्पणम् ।

इति शतचण्डीपाठस्य हवनादिविधिः ।



परिशिष्ट—भाग

[दुर्गाके पाठ, हवन, बलिदान आदि विविध महत्त्वपूर्ण विषयोंपर विचार]

लेखक

वेणीराम गौड़ वेदाचार्य

❀ श्रीहरिः ❀

१. शतचण्डी ९ दिनमें अथवा ५ दिनमें होती है। ५ दिनमें होनेवाली शतचण्डीमें वृद्धिक्रमसे दुर्गाका पाठ होता है। इसमें प्रथम दिन एक पाठ, द्वितीय दिन दो पाठ, तृतीय दिन तीन पाठ, चतुर्थ दिन चार पाठ और पञ्चम दिन पाँच पाठकर शतचण्डी समाप्त करना चाहिये। 'पञ्चमेऽहनि समाप्तिः स्यात्' ऐसा लिखा भी है।

नव दिनकी शतचण्डीमें दुर्गापाठ करनेवाले १० ब्राह्मण होने चाहिये। आचार्य, ब्रह्मा आदि अलग होते हैं। पाँच दिनकी शतचण्डीमें वृद्धिक्रमसे दुर्गापाठ करनेके लिये १० ब्राह्मण होने चाहिये। आचार्य और ब्रह्मा पृथक् होते हैं।

शतचण्डीमें हवन-सामग्री सवा मन लगती है।

२. कुछ आचार्योंका मत है कि शतचण्डी ऐसे दिन प्रारम्भ करना चाहिये, जिससे दुर्गाके १०० पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी अथवा पूर्णिमाको पूर्ण हो जायँ।

३. शतचण्डी अथवा सहस्रचण्डीका दशांश हवन दुर्गाके ७०० श्लोकोंसे अथवा केवल नवार्ण-मन्त्रसे अथवा 'नमो देव्यै महादेव्यै०' इस मन्त्रसे अथवा 'जयन्ती मङ्गला काली०' इस मन्त्रसे किया जा सकता है।

४. शतचण्डीके दशांश हवनमें 'ॐ नमो देव्यै महादेव्यै०' इस मन्त्रसे १० माला अथवा एक मालाद्वारा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस नवार्णमन्त्रसे १० माला अथवा १ मालाद्वारा हवन करना चाहिये।

५. नवार्णमन्त्रका केवल घृतसे ही हवन करना चाहिये।

६. नवरात्रिमें नवमीको ही हवन करना चाहिये अथवा अपनी कुलपरम्पराके अनुसार अष्टमी या नवमीको दिनमें अथवा रात्रिमें हवन करना चाहिये। अथवा अष्टमी और नवमीकी सन्धिमें हवन करना चाहिये।

७. नवमीको बलिदान करनेसे ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है—

नवम्यां बलिदानं तु कर्तव्यं वै यथाविधि।
जपं होमं च विधिवत् कुर्यात्तत्र विभूतये ।।

(कालिकापुराण)

'नवमी तिथिको यथाविधि बलिदान करना चाहिये। ऐश्वर्यकी प्राप्तिके लिये विधिवत् जप और हवन करना चाहिये।'

नवम्यामपराह्णेन बलिदानं प्रशस्यते।
दशमीं वर्जयेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा ।।

(कालिकापुराण)

'नवमी तिथिको अपराह्णमें बलिदान करना प्रशस्त कहा गया है। बलिदानके लिये दशमी तिथिका परित्याग कर देना चाहिये, इसमें विचारकी आवश्यकता नहीं है।'

८. अष्टमी तिथिको बलिदान करनेसे हानि होती है—

'बलिदाने कृतेऽष्टम्यां पुत्रभङ्गो भवेन्नृप।'

(देवीपुराण)

'हे नृप ! अष्टमी तिथिको बलिदान करनेसे पुत्रका भङ्ग होता है।'

'अष्टम्यां बलिदानेन पुत्रनाशो भवेद् ध्रुवम्।'

(कालिकापुराण)

'अष्टमी तिथिको बलिदान करनेसे निश्चित ही पुत्रका नाश होता है।'

९. दुर्गा देवीका विसर्जन नवमी और दशमी दोनों ही दिन हो सकता है। वस्तुतः दुर्गाका विसर्जन दशमीको प्रातःकाल करना उचित है।

१०. दुर्गासप्तशतीका एक ही दिनमें कई पाठ करना हो, तो कवच, अर्गला, कीलकका प्रथम बार अर्थात् एक ही बार पाठ करना चाहिये, बार-बार नहीं। रहस्यत्रयका पाठ दुर्गापाठके अन्तवाले पाठमें करना चाहिये।

११. नवार्ण-मन्त्रका जप दुर्गापाठके सभी पाठमें आद्यन्तमें करना चाहिये और रात्रिसूक्त तथा देवीसूक्त प्रत्येक दुर्गापाठमें करना चाहिये।

१२. दुर्गापाठ करते समय अध्यायके अन्तमें 'इति' कहनेसे लक्ष्मीका नाश, 'वध' कहनेसे कुलका नाश और 'अध्याय' कहनेसे अपने प्राणका नाश होता है। अतः केवल 'मार्कण्डेयपुराणे' इत्यादि कहना चाहिये।

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीं वधः कुलविनाशकः।
अध्यायो हरते प्राणान् मार्कण्डेयादिकं वदेत्॥

१३. दुर्गाके सम्पुटित पाठमें भी दुर्गासप्तशतीके ७०० मन्त्रोंसे ७०० ही आहुति देनी चाहिये, यह 'दुर्गोपासनाकल्पद्रुम' में लिखा है।

कदाचित्सम्पुटैर्युक्तं पठेत्सप्तशतीस्तवम्।
ससम्पुटं पठेद् होमो हुनेत् सप्तशताहुतीः॥

१४. सात्त्विक मनुष्योंको दुर्गापूजामें कूष्माण्ड, नारिकेल, इक्षुदण्ड, नीबू और उड़द आदिकी बलि देनी चाहिये।

१५. दक्षिण दिशामें दुर्गाका मुख कर स्थापन करनेसे वह शुभ देनेवाली, पूर्व दिशामें मुख कर स्थापन करनेसे जयको देनेवाली और पश्चिम दिशामें मुख कर स्थापन करनेसे प्रत्येक कार्यको सिद्ध करनेवाली कही गयी है। उत्तर दिशामें मुख कर दुर्गाकी स्थापना नहीं करना चाहिये।

याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्द्धिनी।
पश्चिमाभिमुखी नित्या न स्थाप्या सौम्यदिङ्मुखी॥

१६. शतचण्डी, सहस्रचण्डी आदिमें १०० अथवा ९ अथवा १ कुमारीका प्रतिदिन पूजन करना चाहिये। अथवा यथाशक्ति कुमारीका पूजन करना चाहिये। अथवा प्रतिदिन एक-एक कन्याकी संख्याका वृद्धि कर उसका पूजन करना चाहिये।

१७ शतचण्डी, सहस्रचण्डी आदिमें जाति-भेदसे कन्याके पूजनका अलग-अलग फल इस प्रकार लिखा है—

(क) विप्रां सर्वेष्टसंसिद्ध्यै यशसे क्षत्रियोद्भवाम् ।
वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत् ।।

(ख) ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् ।
लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ।।
दारुणे चान्त्यजातीयां पूजयेद् विधिना नरः ।।

१८. शतचण्डी आदिमें पूजनार्थ वर्ज्य कन्या इस प्रकार कही गयी हैं—

हीनाधिकाङ्गीं कुष्ठाधिविकारां कुकुलां तथा ।
ग्रन्थिस्फुटितसर्वाङ्गीं रक्तपूयव्रणाङ्किताम् ।।
जात्यन्धां केकरां काणां कुरूपां तनुरोमशाम् ।
सन्त्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासीगर्भसमुद्भवाम् ।।

१९. शतचण्डी और सहस्रचण्डी सर्वदा की जा सकती है। इसके लिये उत्तरायण और दक्षिणायनका विचार अनावश्यक है ।

२०. शतचण्डी अथवा सहस्रचण्डीमें अखण्ड दीपक यदि बुझ जाय, तो 'ॐ जयन्ती मङ्गला काली' इस मन्त्रसे अथवा 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस नवार्ण-मन्त्रसे अथवा 'ॐ देवि ! प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद०' (दुर्गा ११।३) से पाठका दशांश हवन करे। अथवा 'करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यपहन्तु चापदः' (दुर्गा ५।८१) इस मन्त्रसे दशांश हवन करे ।

२१. नवरात्रिका पर्व प्रतिवर्ष चार बार आता है—चैत्र, आश्विन, आषाढ़ और माघमें ।

चैत्रेऽऽश्विने तथाऽऽषाढ़े माघे कार्यो महोत्सवः ।
नवरात्रे महाराज पूजा कार्या विशेषतः ।।
(देवीपुराण ३।२४।२१)

आश्विने मधुमासे वा तपोमासे शुचौ तथा ।
चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात्फ़लदायकम् ।।
देवीभागवत, माहात्म्य १।३१)

२२. दुर्गायज्ञमें 'दुर्गासप्तशती' के द्वारा हवन होता है। प्रतिदिन अथवा पूर्णाहुतिके दिन 'दुर्गासहस्रनामावली' (देवीसहस्रनामावली) से हवन करना चाहिये। दुर्गायज्ञमें हवन करनेवाले ९ विद्वान् होते हैं। आचार्य, ब्रह्मा और द्वारपाल आदि सब मिलाकर २१ अथवा १६ विद्वान् होते हैं। यह यज्ञ ९ दिनमें होता है। दुर्गायज्ञमें हवनसामग्री १५ मन अथवा १० मन लगती है।

२३. जो मनुष्य प्रतिदिन दुर्गाका पाठ करता है, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती और उसकी सुखपूर्वक ज्ञानावस्थामें मृत्यु होती है।

२४. जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदयके पूर्व और सायङ्काल दीपक जलनेके अनन्तर दुर्गाके मन्दिरमें अथवा दुर्गाके चित्रको अपने सामने रखकर घृतका दीपक जलाकर दुर्गाका ध्यान करता हुआ दुर्गासप्तशतीके चतुर्थाध्यायकी 'शक्रादिस्तुति' का पाठ करता है, वह विघ्न-बाधाओंसे सर्वदा मुक्त रहता है और उसको मनोभिलषित वस्तुओंकी प्राप्ति होती है।

२५. जो मनुष्य निशीथ कालके बाद घृतका दीपक जलाकर दुर्गाका ध्यान करता हुआ 'ॐ दुर्गे स्मृता०' इस मन्त्रका प्रतिदिन ११ माला जप करता है, उसको धनकी प्राप्ति होती है और उसकी सर्वविध विपत्तियाँ दूर हो जाती हैं।

२६. जो मनुष्य 'ॐ शूलेन पाहि नो देवि०' इस मन्त्रको १२५०००० (बारह लाख पचास हजार) बार जपकर सिद्ध कर लेता है, वह उक्त मन्त्रको ९ बार कहकर जिसको झाड़ देता (फूंक देता) है उसका अर्धकपारी (मस्तकका आधा दर्द) रोग दूर हो जाता है।



दुर्गोपासनामें पशु-बलिका विचार

'कलौ चण्डीविनायकौ' के अनुसार कलियुगमें दुर्गा और गणेशकी विशेष प्रधानता कही गयी है। इसीलिये कलियुगमें दुर्गाकी विशेष महत्ता है।

दुर्गाकी उपासना नित्य और काम्य-भेदसे सर्वदा की जाती है। दुर्गाकी उपासनामें कुछ लोग 'पशु-बलि' भी करते हैं, जोकि कलियुगमें वर्ज्य है। जिस प्रकार कलियुगमें गवालम्भन प्रभृति त्याज्य हैं, उसी प्रकार कलियुगमें पशु-वलि भी त्याज्य है।

वैदिक यज्ञोंमें पशुकी हिंसा मीमांसादि शास्त्रोंके द्वारा विहित होने पर भी सर्वशास्त्र-सम्मत नहीं है। सांख्यदर्शनके प्रणेता कपिल मुनिने यज्ञीय हिंसाको भी प्रत्यवाय कहा है।

श्रौतयज्ञमें बलिदानकी जो विधि है, उसे बहुत लोग क्षेपक कहते हैं। शतपथब्राह्मण (३।२।२।९) में वनस्पतियोंको 'यज्ञिय' कहा गया है। अतः पशुओंकी बलि न कर उसके अनुकल्प (बदले) में वनस्पतियोंके द्वारा कार्य किया जा सकता है। अतः श्रौतयज्ञमें साक्षात् पशुबलि न कर उसके स्थानपर वनस्पति अथवा आटेके पिण्ड आदिसे ही काम चलाना चाहिये।

श्रौतयज्ञमें पशु-बलिका जो विधान है, वह अन्य युगके लिये है, कलियुगके लिये नहीं। अतः कलियुगमें पशु-बलि सर्वथा निषिद्ध और निन्दनीय है।

वेदों तथा तदनुयायि शास्त्रोंमें जहाँ पशुहिंसाके वचन मिलते हैं, वहीं पर **'अहिंसा वैदिकी प्रोक्ता'** इत्यादि वचन भी प्राप्त हैं। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति आदि धर्मशास्त्रके ग्रन्थोंमें कलिवर्ज्य-प्रकरणमें पशुहिंसानिषेधपरक सामान्य तथा विशेष अनेकों प्रमाण उपलब्ध हैं।

शास्त्रोंमें **'मा हिंस्यात्सर्वा भूतानि'** जो लिखा है, यह वस्तुतः जीवमात्रकी हिंसाका निषेधक है। अतः जीवहिंसाके अनुकल्पमें कूष्माण्ड, नारिकेल, इक्षुदण्ड, उड़द आदिका उपयोग करना चाहिये।

वेदादि शास्त्रोंमें पशु-बलिके स्थानपर प्रतिनिधिरूपसे कूष्माण्ड, नारिकेल, इक्षुदण्ड, नीबू, उड़द आदि [1]बलि-द्रव्य स्वीकार किया है, जो कि तत्तत्स्थानोंमें यह विधान प्रचलित भी है। अतः सभीको देवी-देवताके पूजनमें पशुबलिके स्थानमें कूष्माण्ड, नारियल आदिकी बलि करनी चाहिये। लिखा भी है—

'पूजोत्तरं माषभक्तबलिं कूष्माण्डादिबलिं वा निवेदयेत्।'

(रुद्रयामल)

'पूजाके अनन्तर उड़दकी बलि अथवा कूष्माण्डकी बलि देवी-देवताको समर्पित करे।'

कृत्वा घृतमयं व्याघ्रं नरं सिंहं तथैव च।
पूजोत्तरं च देवाग्रे बलिरूपेण अर्पयेत्॥

(स्कन्दपुराण)

'घृतका व्याघ्र (बाघ), मनुष्य अथवा सिंह बनाकर, पूजाके अनन्तर देवताके सम्मुख बलिरूपमें अर्पित करे।'

अतः सात्त्विक प्रकृतिके मनुष्योंको पशुबलि नहीं करनी चाहिये। सात्त्विक मनुष्योंको जीवहत्या करनेका निषेध किया गया है—

सात्त्विको जीवहत्यां वै कदाचिदपि नाचरेत्।
इक्षुदण्डञ्च कूष्माण्डं तथा वन्यफलादिकम्॥
क्षीरपिण्डैः शालिचूर्णैः पशुं कृत्वा चरेद् बलिम्॥

(महाकालसंहिता)

'सात्त्विक मनुष्यको कदापि जीवहत्या नहीं करनी चाहिये। वह इक्षुदण्ड, कूष्माण्ड और वनके फलादिकी बलि दे अथवा खीरके पिण्ड और चावलके पिसे हुए पिण्डका पशु बनाकर बलि दे।'

१. अन्नं व्यञ्जन-पुष्पाम्बु-बलिद्रव्यमुदाहृतम्। (जयसिंहकल्पद्रुम)

बलिदानके वास्तविक रहस्यको न जाननेवाले मांसभक्षक निरपराध पशुओंका बलिदानकर घोर पाप करते हैं। वस्तुतः उत्तम कोटिका बलिदान तो 'आत्म-बलिदान' है। आत्म-बलिदानमें मनुष्यको अपने जीवात्माको ही पशु मानकर उसे देवी-देवताके निमित्त समर्पण करना पड़ता है।

ऐतरेयब्राह्मण (६।३) में लिखा है—

'सर्वाभ्यो वा एष देवताभ्य आत्मानमालभते।'

अर्थात् यज्ञकर्त्ता समस्त देवताओंकी प्रसन्नताके लिये अपने आत्मा (अहङ्कार) को समर्पित करता है।

जो लोग दुर्गाके यथार्थ स्वरूपको न जानकर उसके निमित्त पशुबलि करते हैं, उन्हें पशुबलिको जगह अपने अहंभावका बलिदान करना चाहिये, न कि निरीह पशुओंका।

प्राचीन धार्मिक इतिहास देखनेसे प्रतीत होता है कि—एक युग ऐसा था जब यज्ञ तथा धार्मिक अनुष्ठानोंके अतिरिक्त भी पशुबलिका प्राबल्य हो गया था और मांस-भक्षणके लोभियोंने धर्मको आडम्बर बनाकर अपनी तृप्तिके लिये हिंसाको प्रचारित किया। ऐसी स्थितिमें कुछ व्रात्यों (संस्कारहीनों) को सनातन वैदिकधर्मपर आक्रमण करनेका अवसर मिला। हिंसाको आड़ लेकर शास्त्र और वेदोंपर आक्रमण प्रारम्भ हुए और नवीन मिथ्या धर्मोंकी परिकल्पना होने लगी। ऐसी स्थितिमें मुनियों, शास्त्रविदों और मनीषियोंने धर्मरक्षाके निमित्त सात्त्विक वैष्णव यज्ञोंका प्रचार प्रारम्भ किया और पशुबलिके स्थानमें कूष्माण्ड, नारिकेल, इक्षुदण्ड तथा घृत, दधि, मधु इत्यादिकी बनी हुई बलियोंको स्वीकृत किया। इन सात्त्विक अनुष्ठानोंकी प्रतिष्ठा महर्षि वेदव्यासजीने विभिन्न पुराणोंमें की। इनके पश्चात् पशुबलिके आग्रहकी आवश्यकता ही नहीं रह गयी। स्मृतियों और उपनिषदों आदिने भी इन सात्त्विक अनुष्ठानोंका पूर्णतः अनुमोदन ही किया।

अतः मनुष्यमात्रको देवी-देवताके निमित्त पशुबलि नहीं करनी चाहिये। जो मनुष्य देवी-देवताके निमित्त पशुबलि करते हैं, उन्हें अवश्य ही पाप लगता है। इसलिये **'अहिंसा परमो धर्मः'** के अनुसार सबको अहिंसारूपी धर्मका पालन करते हुए दुर्गाकी उपासना करनी चाहिये।

ब्राह्मणके लिये पशुबलिका निषेध

ब्राह्मण परम सात्त्विक कहा गया है। अतः ब्राह्मणको देवी-देवताके बलिदानमें सर्वदा कूष्माण्ड, श्रीफल और उड़द आदि सात्त्विक द्रव्यका ही उपयोग करना चाहिये, बकरा आदि पशुओंका नहीं।

ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्माण्डं बलिकर्मणि।
श्रीफलं वा सुराधीश! छेदं नैव तु कारयेत्॥

(कालिकापुराण)

'हे सुराधीश! ब्राह्मण सर्वदा बलिकर्ममें कूष्माण्ड अथवा श्रीफल (नारिकेल) को प्रदान करे, किन्तु वह इनका छेदन (कर्तन) न करे।'

'माषान्नेन बलिर्देयो ब्राह्मणेन विजानता।'

(कालिकापुराण)

'मर्मज्ञ ब्राह्मणको उड़दका ही बलिदान करना चाहिये।'

अतः स्पष्ट है कि ब्राह्मणोंको सर्वदा सात्त्विक द्रव्यसे ही देवी-देवताका पूजन और बलिदान करना चाहिये।

'द्रव्येण सात्त्विकेनैव ब्राह्मणः पूजयेच्छिवाम्।'

सर्वसाधारणके लिये बलिदानका विचार

रम्भेक्षु नारिकेलं च गुवाकं कण्टकीफलम्।
उर्वारुकं करञ्जं च छेदयेच्छुरिकादिना॥

(कालिकापुराण)

'केला, इक्षुदण्ड, नारिकेल, गुबाक (सुपारी), कण्टकीफल (कटहर), ककड़ी और करौंदा—इनको छूरी आदिसे छेदकर देवी-देवताओंके निमित्त बलिदान किया किया जा सकता है।'

ब्राह्मणके लिये मद्य और रुधिर देवताओंको समर्पित करनेका निषेध

मद्यं दत्त्वा ब्राह्मणस्तु ब्राह्मण्यादेव हीयते।
स्वगात्ररुधिरं दत्त्वा ब्रह्महत्यामवाप्नुयात्॥

(कालिकापुराण)

'जो ब्राह्मण देवपूजनमें देवी-देवताओंको मद्य समर्पित करता है, वह ब्राह्मणत्वसे च्युत हो जाता है और जो अपने शरीरके रुधिर-को समर्पण करता है, वह ब्रह्महत्याको प्राप्त होता है।'

ब्राह्मणो मदिरां दत्त्वा ब्राह्मण्यादेव हीयते।
स्वगात्ररुधिरं दत्त्वा ब्रह्महत्यामवाप्नुयात्॥

(भैरवतन्त्र)

'ब्राह्मणो मदिरां दत्त्वा ब्राह्मण्यादेव हीयते।'

(बृहत्सङ्गमतन्त्र)

ब्राह्मणको देवी-देवताओंके निमित्त मद्य समर्पित करनेके लिये स्पष्ट निषेध लिखा है—

'वरं प्राणाः प्रगच्छन्तु ब्राह्मणो नार्पयेत् सुराम्।'

'ब्राह्मणका प्राण भले ही चला जाय, किन्तु वह देवी–देवताको मद्य समर्पित न करे।'

जो लोग वर्णाश्रमोचित धर्मका विचार न कर देवी-देवताकी पूजामें मांस, रक्त और मदिराका उपयोग करते हैं, उनकी निश्चित ही अधोगति होती है, यह स्पष्ट लिखा है—

आवाभ्यां पिशितं रक्तं सुरां वापि महेश्वरि ।
वर्णाश्रमोचितं धर्ममविचार्यार्पयन्ति ये ॥
भूत-प्रेत-पिशाचास्ते भवन्ति ब्रह्मराक्षसाः ॥

(अगस्त्यसंहिता-तन्त्र)

'हे माहेश्वरी ! जो लोग वर्णाश्रमोचित धर्मको न विचार कर हम दोनोंको मांस, रक्त और सुरा समर्पित करते हैं, वे भूत, प्रेत, पिशाच और ब्रह्मराक्षस होते हैं ।'

अतः सभीको विशेषतः ब्राह्मणोंको देवी-देवताओंके निमित्त भूलकर भी मद्य और रक्त समर्पित नहीं करना चाहिये ।

बलिदानके लिये छाग (बकरा) के प्रतिनिधि द्रव्य

कूष्माण्डमिक्षुदण्डश्च मद्यं सारद्यमेव च ।
एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौ छागसमाः सदा ॥

(कालिकापुराण)

'कूष्माण्ड, इक्षुदण्ड, मद्य और सारद्य (मद्य–मांसकी तरह) ये सभी बलिदानके सदृश कहे गये हैं और ये सभी तृप्तिमें छाग (बकरे) के सदृश कहे गये हैं ।'

बलिदानके लिये मद्यके प्रतिनिधि द्रव्य

अवश्यं विहितं यत्र मद्यं तत्र द्विजः पुनः ।
नारिकेलजलं कांस्ये ताम्रे वा विसृजेन्मधु ॥

(कालिकापुराण)

'जहाँ मदिरा प्रदान करना आवश्यक है, वहाँ द्विज कांसेके पात्रमें नारिकेलके जलको अथवा तांबेके पात्रमें शहदको समर्पित करे ।'

यत्रावश्यं विनिर्दिष्टं मदिरापानपूजनम् ।
ब्राह्मणस्ताम्रपात्रे च मधुमद्यं प्रकल्पयेत् ॥

(कुलचूड़ामणितन्त्र)

'जहाँ पूजनमें मदिरा-पानका अवश्य निर्देश किया गया है, वहाँ ब्राह्मण ताम्रपात्रमें मधुको डालकर अर्पित करे।'

सुराभावे च गोक्षीरं द्विजो दद्याद् युगे युगे।
द्रव्याभावे चानुकल्पैः पूजयेत् परदेवताम्॥

(निरुक्ततन्त्र, पञ्चमपटल)

'द्विज प्रत्येक युगमें मदिराके अभावमें गोदुग्ध दे और अन्य द्रव्योंके अभावमें उनके अनुकल्प (प्रतिनिधि) द्रव्योंसे परदेवताका पूजन करे।'

शतचण्डी आदिके लिये प्रशस्त मास, तिथि, वार और नक्षत्र

मास

वैशाखः फाल्गुनो माघः श्रावणो मार्ग एव च।
आश्विनः कार्तिको मासाः पूजायां तु शुभावहाः॥

तिथि

तृतीया पञ्चमी पूर्णा सप्तमी च त्रयोदशी।
दशमी द्वादशी षष्ठी चतुर्थी नवमी तथा॥
कृष्णाष्टमी चतुर्दश्यौ तिथयः सर्वकामदाः॥

वार

रविर्बृहस्पतिः सोमो बुधः शुक्रः शुभावहाः।

नक्षत्र

अश्विनी रोहिणी स्वाती पौष्णं ज्येष्ठोत्तरात्रयम्।
पुष्यं पुनर्वसु भानि श्रेष्ठानि शक्तिपूजने॥

दुर्गाके कुछ महत्त्वपूर्ण सम्पुट-मन्त्र

(१) विपत्ति-नाशके लिये

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

(२) भय-नाशके लिये

(क) सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।।

(ख) एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ।।

रोग-नाशके लिये

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।

शत्रु-नाशके लिये

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद् वैरिविनाशनम् ।।

महामारी-नाशके लिये

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।।

सब प्रकारके कल्याणके लिये

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

सभी प्रकारके शूलोंको दूर करनेके लिये

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।।

पत्नीकी प्राप्तिके लिये

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ।।

सर्वविध बाधाओंसे मुक्ति और धन-पुत्रादिकी प्राप्तिके लिये

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

विविध दुर्गा-गायत्री

१. कात्यायन्यै विद्महे कन्यकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥
(तैत्तिरीयारण्यक १०।१)

२. कात्यायनाय विद्महे कन्याकुमारी च धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥
(तैत्तिरीयोपनिषत्)

३. कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारी च धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥
(नारायणोपनिषत् ७)

४. कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि ।
तन्नो दुर्गा: प्रचोदयात् ॥
(लिङ्गपुराण, उत्तरार्धं ४८।२६)

५. कात्यायन्यै विद्महे [1]कन्यकुमारी च धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥

६. महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

---

१. कन्या चासौ कुमारी कन्यकुमारी ।

दुर्गापूजन-सामग्री

रोली	तुलसी
मौली	दूर्वा
धूपवत्ती	बिल्वपत्र
केशर	कमलके पुष्प
कपूर	इलायची छोटी
रूई	लवंग
अबीर (गुलाल)	जावित्री
बुक्का(अभ्रक)	जायफल
सिन्दूर	नारियल
चावल	गिरिके गोले
पान	पंचपल्लव
सुपारी	पंचरङ्ग
पेड़ा	कलश ताम्रका
बतासा	थाली
ऋतुफल	कटोरी
दुग्ध	धोती जनानी
दही	सिंहासन
घृत	छत्र
चीनी	चंवर
सहत	पंचपात्र
यज्ञोपवीत	आचमनी
अतरकी शीशी	अर्घा
गुलाबजलकी शीशी	तष्टा
पंचमेवा	कमण्डलु
मिश्री	रुद्राक्षकी माला
गङ्गाजल	घण्टा
पुष्पमाला	घड़ौल
पुष्प फुटकर	शङ्ख

शतचण्डी-सामग्री

रोली
मौली
धूपवत्ती
केशर
कपूर
रूई
अबीर
बुक्का (अभ्रक)
सिन्दूर
चावल ५ कीलो
पान
सुपारी ४ कीलो
पेड़ा
बतासा
ऋतुफल
गोबर
गोमूत्र
दुग्ध
दही
घृत
चीनी
सहत
यज्ञोपवीत
अतरकी शीशी
गुलाबजलकी शीशी
पंचमेवा
मिश्री
गङ्गाजल
पुष्पमाला
फुटकर पुष्प
तुलसी
दूर्वा
बिल्वपत्र
कमलके पुष्प
इलायची छोटी
लवंग
जावित्री
जायफल
गिरिके गोले
नारियल
लाल रंग
पीला रंग
काला रंग
हरा रंग
आम्रपत्र
गूलरपत्र
पाकरपत्र
वटपत्र
पीपलपत्र
पञ्चरत्नकी पुड़िया ५
सर्वौषधि
सप्तमृत्तिका

दुर्गापूजन-सामग्री

रोली
मौली
धूपवत्ती
केशर
कपूर
रूई
अबीर (गुलाल)
बुक्का(अभ्रक)
सिन्दूर
चावल
पान
सुपारी
पेड़ा
बतासा
ऋतुफल
दुग्ध
दही
घृत
चीनी
सहत
यज्ञोपवीत
अतरकी शीशी
गुलाबजलकी शोशी
पंचमेवा
मिश्री
गङ्गाजल
पुष्पमाला
पुष्प फुटकर

तुलसी
दूर्वा
बिल्वपत्र
कमलके पुष्प
इलायची छोटी
लवंग
जावित्री
जायफल
नारियल
गिरिके गोले
पंचपल्लव
पंचरङ्ग
कलश ताम्रका
थाली
कटोरी
धोती जनानी
सिंहासन
छत्र
चंवर
पंचपात्र
आचमनी
अर्घा
तष्टा
कमण्डलु
रुद्राक्षकी माला
घण्टा
घड़ौल
शङ्ख

शतचण्डी-सामग्री

रोली	मिश्री
मौली	गङ्गाजल
धूपवत्ती	पुष्पमाला
केशर	फुटकर पुष्प
कपूर	तुलसी
रूई	दूर्वा
अबीर	बिल्वपत्र
बुक्का (अभ्रक)	कमलके पुष्प
सिन्दूर	इलायची छोटी
चावल ५ कीलो	लवंग
पान	जावित्री
सुपारी ४ कीलो	जायफल
पेड़ा	गिरिके गोले
बतासा	नारियल
ऋतुफल	लाल रंग
गोबर	पीला रंग
गोमूत्र	काला रंग
दुग्ध	हरा रंग
दही	आम्रपत्र
घृत	गूलरपत्र
चीनी	पाकरपत्र
सहत	वटपत्र
यज्ञोपवीत	पीपलपत्र
अतरकी शीशी	पञ्चरत्नकी पुड़िया ५
गुलाबजलकी शीशी	सर्वौषधि
पंचमेवा	सप्तमृत्तिका

मेंहदी पीसी
हलदी पीसी
सुरवारीका बीया
कालीमिर्च
गुरुच
पीली सरसों
लाल चन्दन
अनार
पालकका साग
खोवा
तेल सुगन्धित
उड़द काला
पापड़
काष्ठकी चौंकी ५
काष्ठका पाटा ३
लोहेकी कंटिया ४
केलेके स्तम्भ ८
कंबल ऊनी १
सूतकी डोरी १० हाथ
नवग्रहकी लकड़ी—
मदारकी लकड़ी १०८
पलाशकी लकड़ी १०८
खैरकी लकड़ी १०८
अपामार्गकी लकड़ी १०८
पीपलकी लकड़ी १०८
गूलरकी लकड़ी १०८
शमीकी लकड़ी १०८
दूर्वा १०८
कुशा १०८

कलश चाँदीका अथवा ताम्रका १
कमण्डलु (झारी) ताँबेका १
थाली २
थाली काँसेकी १
कटोरा कांसेका बड़ा १
कटोरी ५
तस्तरी ६
कांसेकी कटोरी (छायापात्र) २
पूर्णपात्र (बघोना) १
बघोना (खीर पकानेके लिये) १
कड़छुल पीतलकी १
आरतीदानी १
धूपदानी १
घण्टा १
घड़ौल १
शङ्ख १
जनानी साड़ी रेशमी १
जनानो धोती ३
मर्दानी धोती ७
अंगोछा ७
रेशमी जनाना ओढ़ना १
कब्जा १
रेशमी चुंदड़ी १
सफेद कपड़ा गज ४
लाल कपड़ा गज १।
बन्दरवाल १
पचरंगा ध्वजा १
पचरंगा चँदवा बड़ा १
चँदवा छोटे ४

सौभाग्यपिटारी १
शीशा १
दुर्गाकी फोटो बड़ी १
दुर्गाकी सुवर्णकी मूर्ति १। तोलेकी १
सुवर्णकी नथ १
सुवर्णकी माला १
सुवर्णकी शलाका १
सुवर्णके टुकड़े २१
चाँदीका सिंहासन १
चाँदीका छत्र १
चाँदीका चमर १
चाँदीकी थाली १
चाँदीकी कटोरी २
चाँदीका पंचपात्र १
चाँदीका अर्घा १
चाँदीका तष्टा १
चाँदीकी आचमनी १
चाँदीका चौकोर पत्र (१६ अंगुल लम्बा और चौड़ा) १
रुद्राक्षकी माला १

वरण-सामग्री—

धोती
दुपट्टा
अंगोछा
बनियाइन
लोटा
गिलास
पञ्चपात्र
आचमनी
गोमुखीमाला
खड़ाऊँ
दुर्गाकी पुस्तक
आसन
आचार्यके लिये विशिष्ट वरणसामग्र

हवन-सामग्री—

तिल २५ सेर
चावल १२॥ सेर
जौ ६॥ सेर
चीनी ३। सेर
घृत ५ सेर
पञ्चमेवा २ पाव
कमलगट्टा २ पाव
गुग्गुल १। पाव
भोजपत्र १। पाव
चन्दनका चूरा २ पाव
आमकी लकड़ी २ मन
गोयठा (कण्डा) २०



जगज्जननीसे !

हो परम बन्धु तुम पतितोंकी, तुम दीनोंकी रखवाली हो,
जिसका अपना कोई न रहा, तुम उसकी निज घरवाली हो ।
जो है सब जगसे निराश, तुम उसको आशा देती हो,
जो आता शरण तुम्हारी है, तुम उसको आश्रय देती हो ।
जो मनसे तुमको याद करे, तुम उसके मनमें रमती हो,
जो भयसे तुमको याद करे, तुम उसको निर्भय करती हो ।
जो पापी तुमको याद करे, तुम उसको पावन करती हो,
जो तुम पर निर्भर रहता है, तुम उसको निर्भय करती हो ।
जो विश्वास तुम्हारा करता है, तुम शान्ति-सनातन देती हो,
जो दीन तुम्हारे द्वार खड़ा, तुम उससे हृदय मिलाती हो ।
जो पतित तुम्हारे साथ लड़े, तुम उसको सद्गति देती हो,
तुम सबकी सुहृद अहैतुक हो, तुम सबकी अन्तर्यामिनि हो ।
तुम सबकी नित्य आत्मा हो, तुम सबकी सच्ची स्वामिनि हो,
तुम निश्चय सबकी जीवन हो, तुम निश्चय सबकी सब-कुछ हो ।



श्री गोकुलदास संस्कृत ग्रन्थमाला २१

माध्यन्दिन शाखीया

विवाह-पद्धति

(हिन्दी-मन्त्रार्थ सहिता)

लेखक

याज्ञिकसम्राट्, वेदवाचस्पति

पण्डित श्रीवेणीरामशर्मा गौड

वेदाचार्य, काव्यतीर्थ

इस विवाह-पद्धति का क्रम पारस्करादि आचार्यों के अनुकूल रखा गया है। प्रत्येक मन्त्र का हिन्दी में अर्थ भी दिया गया है जिससे प्रत्येक विद्वान् सुविधा के साथ मन्त्रार्थ कहकर अपने-अपने यजमानों को प्रसन्न कर सकता है।

इस विवाह-पद्धति की भूमिका में विवाह का उद्देश्य और महत्त्व बतलाते हुए विवाह को एक महत्त्वपूर्ण 'यज्ञ' कहा है जिसका रक्षण और पालन पति और पत्नी के लिये आवश्यक है। इस विवाह-पद्धति के प्रारम्भ में विवाह-सम्बन्धी ४२ महत्त्वपूर्ण विषय दिये गये हैं जिनका ज्ञान प्रत्येक विद्वान् को परमावश्यक है। इस प्रकार की सर्वोत्तम विवाह-पद्धति का मूल्य लागत रखा गया है।

मूल्य ५-०

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्भा विश्वभारती

चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)

वाराणसी-२२१००१

फोन : ६५४४४